जिहाद फी सबीलिल्लाह में
भाग लेने के ४४ उपाय
इमाम अनवर अल अवलक़ी रहिमहुल्लाह

जिहाद फी सबीलिल्लाह में

भाग लेने के ४४ उपाय

इमाम अनवर अल अवलक़ी रहिमहुल्लाह

सुची

अनुवादक की बातें

जो पुस्तिका आपके हाथों में है। यह इमाम अनवर अवलकी रहिमहुल्लाह की किताब 44 way of supporting jihad का हिंदी अनुवाद है। जिसका मूल संदर्भ मुहम्मद बिन अहमद अस सालिम हफिजहुल्लाह की अरबी किताब ٣٩ وسيلة لخدمة الجهاद والمشاركة فيه है। इस किताब में जिहाद में भाग लेने के विभिन्न उपाय बताए गए है, जिनमें से कुछ उपाय ऐसे हैं, जिनका संबंध जिहाद की तैयारी से है। और बहुत से उपाय ऐसे हैं, जिनका संबंध प्रत्यक्ष रूप में जिहाद से हैं, जिनको जान कर प्रत्येक मुसलमान प्रत्यक्ष रूप से जिहाद में भाग ले सकता है। यही कारण है, कि यहूदी और पश्चिमी विचारकों ने इस लेख पर गहरा शोध करके यह निर्णय लिया है, कि यह किताब मुसलमानों को जागरूक करके मैदान में लाने और हमारी सत्ता को जड़ से उखाड़ फेंकने के लिए अल-कायदा के विचारों की तरह प्रभावशाली है। इसी लाभदायकता के कारण इमाम अनवर अवलकी रहिमहुल्लाह ने इस किताब का अंग्रेजी में अनुवाद किया। जो उनकी दूसरी किताबों और तकरीरों की तरह निसंदेह एक अनमोल उपहार है। अंग्रेजी में अनुवाद के बीच अनवर अवलकी रहिमहुल्लाह ने स्पष्ट किया है, कि मैंने अपनी किताब में शैख सालिम की जिस लेख को आधार बनाया है। उसका अनुवाद करते समय अंग्रेजी पढ़े लिखे लोगों और वर्तमान युग के अनुसार कुछ जरूरी परिवर्तन किया है। फिर उस अंग्रेजी अनुवाद का उर्दू अनुवाद इमरान बशीर ने किया, मैंने उसी उर्दू अनुवाद को आधार बनाकर इसका हिंदी में अनुवाद किया है।

मेरे दिल में चाहत उत्पन्न हुई, कि जिहादी किताबों का हिंदी में भी अनुवाद किया जाए ताकि अधिक से अधिक भारतीय मुसलमान इन से लाभान्वित हो सकें। एवं जिस तेजी से आगे बढ़ती हुई मुजाहिदीन की कारवाइयां, और वैश्विक परिवर्तनकारी जिहादी आंदोलनों की कामयाबियां, इस बात का एलान कर रही हैं, कि बहुत जल्द वह समय आने वाला है, कि विश्व का हर वह मुसलमान जिसमें ईमानी गैरत मौजूद है, जिहाद में भाग लेने से वंचित नहीं रहेगा। यह सब परिस्थितियां भी इस बात का तकाजा कर रही हैं, कि जिहादी लिट्रेचरों का अनुवाद विभिन्न भाषाओं में किया जाए। उन्हीं भाषाओं में से एक भाषा हिंदी भी है। जो भारत में राष्ट्र भाषा की हैसियत लिए हुए है। तो इस भाषा में भी अनुवाद करना मुझे आवश्यक महसूस हुआ।

अल्लाह तआला इस किताब को पूरे विश्व के मुसलमानों के लिए लाभदायक बनाए। उनके ऊपर बातिल की ओर से डाले हुए पर्दों को दूर करने, और विभिन्न विधियों द्वारा जिहाद में भाग लेने का माध्यम बनाए। और हम सबके प्रयासों को स्वीकार करके अपनी हमेशा की प्रसन्नता का माध्यम बना दे। आमीन

हिंदी अनुवादक

तमहीद

जिहाद फी सबीलिल्लाह दीने इस्लाम का सब से महान कार्य है । और उम्मते मुस्लिमा की सरबुलंदी, प्रतिष्ठा और सफलता का केवल एक मात्र रास्ता यही है। जब काफिरों ने मुसलमानों की धरतियों पर क़ब्ज़ा जमा रखा हो, जब ताग़ूत के जेल, अल्लाह के वलियों से भरे हुऐ हों, जब अल्लाह का क़ानून दुनिया के किसी कोने में भी लागू न हो, जब प्रत्यक्ष रूप से इस्लाम पर हमले किए जा रहे हों। जब मुस्लिम दुनिया के शासक मुसलमानों के विरोध में काफिरों का साथ दे कर इस्लाम से निकल गए हों, ऐसी स्थिति में इस्लाम और मुसलमानों की सुरक्षा के लिए हर मुसलमान पर जिहाद फर्ज़ हो जाता है। यही कारण है कि आज दुनिया भर के मुसलमानों पर क्षमता और आवश्यकता के अनुसार जिहाद फर्ज़े ऐन है। दिफाई जिहाद जो ईमान के बाद सब से अधिक महत्वपूर्ण फर्ज़ है। इस का हुक्म इक़दामी जिहाद से कहीं ज़्यादा सख़्त है। उदाहरणतया दिफाई जिहाद माँ बाप के इन्कार के बावजूद बच्चों पर, पति की अपत्ति के बावजूद पत्नी पर, और क़र्ज़ देने वाले की अनुमति के बग़ैर क़र्ज़ लेने वाले पर फर्ज़ हो जाता है। और ऐसी स्थिति में जिहाद से दूर रहने वाले के लिए सख़्त वईदें आई हैं।

मेरे प्यारे भाईयो और बहनो! ये मामला अब महत्वपूर्ण ही नहीं बल्कि गंभीर हो चुका है। क्योंकि हमारा दुश्मन कोई एक क़ौम, राष्ट्र और एक नस्ल नहीं, बल्कि हमारा दुश्मन काफिरों की वर्तमान वैश्विक व्यवस्था है। जिस की राजनैतिक और सैनिक योजनाऐं वैश्विक स्तर पर तबाहियां फैला रही हैं। कुफ्फार हमारे खिलाफ ऐसी योजनाऐं बना रहे हैं। जो इस से पहले कभी नही बनाई गईं। इस लिए हम उस महायुद्ध अर्थात अल मलहमतुल कुबरा की ओर बढ़ रहे है, जो मुसलमानों और रोमियों के बीच लड़ी जानी हैं, जिस के बारे मे अहादीस में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बताया है। मैं आगे बढ़ने से पहले फिर ये बतादूँ, कि इस समय जिहाद हर मुसलमान पर क्षमता के अनुसार फर्ज़ है। इसलिए जो भी मुसलमान अल्लाह को प्रसन्न करना चाहता है, उस पर आवश्यक है कि वह जिहाद में भाग लेने के तरीक़े ढूंढे और मुजाहिदीन को अपनी मदद दे। नीचे जिहाद में शामिल होने और सहायता करने के 44 उपाय बताए गए हैं।

1. मुजाहिद बनने की इच्छा करना

जिहाद करने के लिए सब से पहली चीज़ हृदय में इच्छा का होना, कि आप भी मुजाहिदीन के साथ मिलकर काफिरों से लड़ाई करें। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कहा। “जो व्यक्ति इस हाल में मरा, कि उस ने कभी जिहाद में भाग भी नही लिया, और न ही उस ने कभी अपने हृदय में इसकी इच्छा की, उस ने निफाक़ की एक हालत पर मृत्यु पाई।“ (सही मुस्लिम), अल्लाह ताला फरमाते हैं :

(وَلَوْ أَرَادُوا الْخُرُوجَ لَأَعَدُّوا لَهُ عُدَّةً)

“अगर वह लोग वास्तव में जिहाद में निकलने के इच्छुक होते, तो वह लोग इस के लिए कुछ तैयारी करते।” (तोबा:46)

दिफाई जिहाद की पांच शर्तें उलमा ने बताई हैं। उदाहरण के तौर पर अबू कुदामा रहिमहुल्लाह के नजदीक मुसलमान हो, बालिग(वयस्क) हो, निर्धन न हो, और शारीरिक रूप से अक्षम न हो, निर्धन व्यक्ति के लिए निर्धन होने का बहाना उस समय स्वीकार किया जाएगा, जब कोई व्यक्ति उसे आर्थिक सहायता प्रदान करने के लिए तैयार न हो। जिस व्यक्ति को गंभीर बीमारी लगी हुई हो, वह भी माजूर होगा। लेकिन अगर किसी के दिल में जिहाद की चाहत ही मौजूद न हो, तो ऐसे माजूर का बहाना अल्लाह के यहां स्वीकार नहीं किया जाएगा इसलिए कि अल्लाह ने सूरह तौबा की आयत 92 में फरमाया है।

وَلَا عَلَى الَّذِيْنَ اِذَا مَاۤ اَتَوْكَ لِتَحْمِلَهُمْ قُلْتَ لَاۤ اَجِدُ مَاۤ اَحْمِلُكُمْ عَلَيْهِ ۖ تَوَلَّوْا وَّاَعْيُنُهُمْ تَفِيْضُ مِنَ الدَّمْعِ حَزَنًا اَلَّا يَجِدُوْا مَا يُنْفِقُوْنَ (92)

अनुवाद:- उन लोगों पर कोई गुनाह नहीं है जिन्होंने आपसे निवेदन किया कि आप उनके लिए सवारी का प्रबंध कर दें। और आपने फरमाया कि मेरे पास तुम्हारे लिए सवारियों का प्रबंध नहीं है तो इस स्थिति में वापस लौटे कि उनकी आंखों से आंसू बह रहे थे इस गम के कारण कि वह जिहाद में जाने के लिए खुद रुपयों का प्रबंध नही कर सकते।

2. अल्लाह ताला से शहादत की दुआ करना

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया "जो कोई व्यक्ति भी सच्चे मन से अल्लाह से शहादत की दुआ करेगा, तो अल्लाह ताला उसे शहादत के स्थान पर पहुँचा देंगे चाहे वह बिस्तर पर ही मरे। (सही मुस्लिम) शहादत की दुआ करना अल्लाह ताला को बहुत पसंद है। इसलिए कि इससे पता चलता है, कि आप अल्लाह के लिए अपनी जान निछावर करना चाहते हैं। लेकिन आप को सावधान रहना चाहिए, कि कहीं यह दुआ केवल आप के होंठों पर ही न रह जाए, जो व्यक्ति भी अल्लाह से शहादत की दुआ मांगता है।

अगर वह दुआ मांगने में सच्चा है तो वह जिहाद की हर पुकार पर, अल्लाह के रास्ता में मौत के लिए जरुर निकल खड़ा होगा। लेकिन मुझे आश्चर्य है, कि उनका व्यवहार बिलकुल उसके विपरीत है।

आज अल्लाह के दुश्मन अगर मुसलमानों पर हावी हैं, और उनके क्षेत्रों पर कब्जा कर रखे हैं, तो उसका असल कारण यही है, कि शहादत की मुहब्बत से हमारे दिल खाली हो चुके हैं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया। करीब ही कौमें तुम पर हमला करने के लिए एक दूसरे को इस प्रकार बुलाएंगी, जिस प्रकार दस्तरखान पर भूखे लोगों को बुलाया जाता है। सहाबा किराम रजियल्लाहु अन्हुम अजमईन ने पूछा। ऐ अल्लाह के रसूल क्या उस समय हमारी संख्या कम होंगी। तो आपने फरमाया। नहीं, बल्कि तुम बहुत बड़ी संख्या में होगे। मगर तुम्हारी स्थिति ऐसी होगी, जैसे समुद्र का झाग। और अल्लाह तआला तुम्हारे दुश्मनों के दिल से तुम्हारा डर निकाल देंगे। और तुम्हारे दिलों में वहन आ जाएगा। सहाबा किराम ने फिर पूछा। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! यह वहन क्या चीज़ है? रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया दुनिया से प्रेम और मौत से घृणा। (अबू दाऊद)

मेरे भाईयो! शहादत हमारी धार्मिक रिवायत का अंग है। आएं इस रिवायत को फिर से उम्मत में जिंदा करें। क्योंकि अल्लाह के दुश्मन हमारी जिस चीज से डरते हैं, वह यही है, कि मुजाहिदीन मौत से दीवानों की तरह प्यार करते हैं।

3. धन से जिहाद करना अर्थात जिहाद में अपनी दौलत ख़र्च करना।

एक आयत को छोड़ कर कुरआन में मालों से जिहाद करने का चर्चा हर उस स्थान पर किया गया है, जहां पर अल्लाह ने अपनी जानों से जिहाद का चर्चा किया है। इससे मालों द्वारा जिहाद के महत्त्व का पता चलता है, कि जिहाद कितना अधिक धन दौलत पर निर्भर है। दूसरे शब्दों मे हम कह सकते हैं, (पैसा नही तो जिहाद नही)

अल कुर्तबी रहिमहुल्लाह ने अपनी तफ़्सीर मे लिखा है, कि सदके का अजर दस गुना कर दिया जाता है। जबकि जिहाद में जो ख़र्च किया जाता है, उस का अजर 700 गुना अधिक दिया जाता है। अल्लाह ताला फरमाते हैं ।

مَثَلُ الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ كَمَثَلِ حَبَّةٍ اَنْۢبَتَتْ سَبْعَ سَنَابِلَ فِيْ كُلِّ سُنْۢبُلَةٍ مِّائَةُ حَبَّةٍ ؕ وَاللّٰهُ يُضٰعِفُ لِمَنْ يَّشَآءُ

(सूरह बकरह आयत 261) अनुवाद:-जो लोग अपना माल अल्लाह के रास्ते मे ख़र्च करते हैं। उस का उदाहरण ऐसा है, जैसे एक दाना बोया जाए, और उस से सात बालियां निकले, और हर बाली मे सौ दाने हों, इस तरह अल्लाह जिसके लिए अमल को चाहता है कई गुना बढ़ा देता हैं। (बकरह 261)

मुख्य रूप से जो मुसलमान बाहर के देशों मे रहते है। उनके लिए आज के युग में जिहाद में भाग लेने का एक उत्तम रास्ता यह है, कि वह अपना माल जिहाद मे ख़र्च करें। इस कारण से कि कभी-कभी जिहाद के लिए मुजाहिदीन से अधिक माल की आवश्यकता होती है। शैख़ अब्दुल्लाह अज़्ज़ाम रहिमहुल्लाह कहते है। “मुसलमानों को जिहाद की ज़रुरत है, और जिहाद को पैसों की”

4. मुजाहिदीन के लिए फंड इकट्ठा करना

अपना माल ख़र्च करने के साथ-साथ आप को दूसरों को भी जिहाद में ख़र्च करने पर उभारना चाहिए। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया “जिस व्यक्ति ने किसी दूसरे व्यक्ति को नेकी की राह दिखाई। उसे भी उस नेकी करने वाले के बराबर अजर मिलेगा।" दूसरों को जिहाद में ख़र्च करने के लिए उभारिये। वास्तव में जिहाद में ख़र्च करने पर उभारना सुन्नते रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर अमल करना है। क्योंकि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अधिकतर लड़ाइयों में जाने से पहले जिहाद में माल ख़र्च करने को प्रोत्साहित करते थे। आज जिहाद को पैसों की बहुत आवश्यकता है, इस लिए आप केवल अपना माल ही जिहाद में ख़र्च न करें, बल्कि अपने मित्रों और घर वालों को जिहाद में ख़र्च करने पर उभारिये।

5. मुजाहिद को आर्थिक सहायता प्रदान करना

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया। “जिस ने अल्लाह के रास्ते में किसी मुजाहिद के ख़र्चों को सहन किया, तो उसने भी जिहाद किया” इसमें मुजाहिद के हर प्रकार का ख़र्च उठाना सम्मिलित है। अर्थात उस के हथियार (Weapon) और लड़ाई के विभन्न खर्चों के अलावा उसके रहन-सहन, खाने और यात्रा इत्यादि के खर्च का प्रबन्ध करना है। इस अमल द्वारा उम्मत के धनी और निर्धन लोग सवाब में बराबर हो सकते हैं। यानी कोई मालदार किसी निर्धन मुजाहिद को जिहाद में माल द्वारा सहायता करेंगे, तो निर्धन मुजाहिद को जिहाद का अजर मिलेगा। और मालदार (धनी) को भी उस मुजाहिद के जिहाद के बराबर अजर मिलेगा। क्योंकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह फरमाया है, जिसने अल्लाह की राह में लड़ने वाले का सामान पूरा किया। तो ऐसा है, जैसे कि उसने खुद लड़ाई में भाग लिया हो।

6. मुजाहिद के परिवार का ध्यान रखना।

मुजाहिद की अनुपस्थिति में उस के परिवार की सुरक्षा करना, उन की आवश्यकता को पूरा करना, और उन की आर्थिक सहायता करना और उन की इज़्ज़त की रखवाली करना भी बहुत अजर और सवाब का काम है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया। “जो किसी मुजाहिद की अनुपस्थिति में उस के परिवार और घर का ध्यान रखेगा, वह मुजाहिद के अजर में से आधा हिस्सा प्राप्त करेगा” (मुस्लिम)

मुजाहिद के घरवालों की इज़्ज़त की सुरक्षा करना, पीछे रह जाने वाले पर इस तरह ज़रूरी है, जैसे उस की अपनी माँ की सुरक्षा उस पर ज़रूरी है। जो किसी मुजाहिद के घरवालों से ख़्यानत करेगा, तो अल्लाह तआला क़यामत के दिन मुजाहिद को अनुमति देगें, कि उस ख़्यानत करने वाले के आमाल मे से जितनी नेकी लेना चाहे, वह ले ले, तो मुजाहिद उस के आमाल मे से हर वो नेकी ले लेगा जो वह चाहेगा। (मुस्लिम)

जिस व्यक्ति ने न खुद जंग की, न किसी मुजाहिद की लड़ाई का खर्च उठाया, न किसी मुजाहिद के घर वालों की सुरक्षा की, तो वह व्यक्ति मरने से पहले किसी बड़ी मुसीबत मे ज़रूर गिरफ्तार होगा। (अबु दाऊद)

हर मुसलमान अपने घरवालों के बारे में बहुत चिंतित रहता है। लेकिन यही वह चीज़ है, जिस से शैतान लाभ उठाता है और दिल में विभिन्न प्रकार के वसवसे पैदा करता है। और इस तरह वो उसे जिहाद से दूर कर देता है। अगर कोई शैतान के हथकंडो से बच निकले, और जिहाद करने के लिए घर से निकल खड़ा हो, लेकिन इस के बावजूद भी वहाँ शैतान उस के पास बार-बार आएगा और उस मुजाहिद के हृदय में कमज़ोरी पैदा करने का प्रयास करेगा। उसको यह ध्यान दिलाएगा कि “तुम अपने प्यारों को किस हाल में छोड़ आए हो?” इस लिए मुजाहिद के घर वालों की ज़म्मेदारी लेने से मुजाहिदीन को बहुत बड़ी मदद मिलती है। इस से उन के हृदय मज़बूत होते हैं। और वह पूर्णतः निश्चिंत होकर जिहाद में व्यस्त रह सकते हैं। यही कारण है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इसके बारे

में दूसरे मुसलमानों को बहुत ज्यादा उभारा है कि वह मुजाहिदीन की न केवल लड़ाई के मैदानों में मदद करें। बल्कि उनके पीछे उनके परिवार की रक्षा और कफालत का भरपूर जिम्मा लें। ताकि मुजाहिदीन घर से निश्चिंत होकर काफिरों से लड़ाई लड़ सकें।

कितने खेद की बात है, कि आज मुजाहिद की अनुपस्थिति में लोग उस के घर वालों का साहस बढ़ाने, और सहायता करने के बजाय, उलटा उन के सामने उन के पति और बेटों को कोसते हैं। कि किस ने दिमाग़ खराब कर दिया उस का, क्या पागल हो गया है। अमरीका और भारत से लड़ना मौत को न्योता देना है। घर का खर्च कैसे चलेगा तुम्हारा? अगर मर गया तो फिर तुम्हे कौन पूछेगा?

7. शहीद के परिवार की कफालत (देखभाल) करना!

मेरे भाईयों ! हमारे वो शहीद भाई जिन्होंने इस्लाम के बाकी रहने और उम्मत की सुरक्षा के लिए जंग लड़ी, और जिन्होंने हमारे बचाव में अपनी जानों का बलिदान दिया, तो क्या हम ऐसे मुसलमानों को भूल सकते हैं, जिन्होने अल्लाह के रास्ता में अपना सब कुछ क़ुर्बान कर दिया? बिल्कुल नहीं। इसलिए शहीदों के परिवार को मान और सम्मान देना और उन की रक्षा और ज़रूरत का ध्यान रखना, अब हमारा दायित्व बन गया है।

इमाम अहमद बिन हम्बल रहिमहुल्लाह ने रिवायत की है, कि जब हज़रत जाफर बिन अबी तालिब रजियल्लाहु अन्ह शहीद हुऐ तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हज़रत जाफर रजियल्लाहु अन्ह के घर गए। और उनकी घर वाली से कहा। कि बच्चे कहां हैं? उन्हें मेरे पास बुलाओ। जब बच्चे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आए तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन्हें चूमा। यह देख कर हज़रत असमा रजियल्लाहु अन्हा जो उन की घरवाली थी, कहने लगी कि " ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम क्या कुछ खास बात हो गई है? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कहा। हां। आज हज़रत जाफर रजियल्लाहु अन्ह लड़ाई में शहीद हो गए हैं। हज़रत असमा कहती हैं, कि जब मैंने यह सुना, तो रोना शुरू कर दिया। फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम घर से चले गऐ। और अपनी घरवालियों से कहा कि जाफर रजियल्लाहु अन्ह के घर के लोगों के लिए खाने और दूसरी चीज़ो का प्रबन्ध करो! क्योंकि वह बहुत दुखी हैं।

शहीद के बच्चों को बाप के प्यार की आवश्यकता होती है। और वह बाप के बाद कोई दूसरा व्यक्ति भी दे सकता है। इसलिए शहीद की विधवाओं को दूसरे विवाह से नहीं रोकना चाहिए, अगर उनकी चाहत हो। यह बात मैं इसलिए कह रहा हूं, क्योंकि हमें पूरी मुस्लिम उम्मत में दो सांस्कृतिक परिवर्तन लाना है, पहला मुसलमान समाज को विधवाओं और तलाकशुदा औरतों के प्रति नकारात्मक व्यवहार छोड़ देना चाहिए। दुर्भाग्यवश हमारे समाज में यह खराबी सार्वजनिक है। विधवाओं और तलाकशुदा औरतों से मर्द शादी नहीं करते। इस श्रृंखला को पाटना जरूरी है। दूसरा यह कि मुसलमान समाज में एक से अधिक शादियों का चलन खत्म ही नहीं हुआ, बल्कि अब यह एक बुरी बात समझी जाती है। जबकि एक से अधिक शादियां कभी-कभार लड़ाइयों के ज़माना में एक आर्थिक आवश्यकता बन जाती है। इसी नकारात्मक व्यवहार के कारण से पूरे विश्व में हमारी असंख्य मुसलमान बहनें शादी

जैसी मूल आवश्यकता से भी वंचित हैं। उनमें कुंवारी भी हैं, और तलाकशुदा और विधवाएं भी। जबकि सहाबा किराम रजियल्लाहु अन्हुम अजमईन के ज़माना में कोई भी ऐसी औरत नहीं थी जिसका पति न हो। अर्थात उसका वह साथी जो उसकी शारीरिक, मानसिक और आर्थिक आवश्यकताओं की कफालत करने वाला हो। हजरत जाफर की शहादत के बाद हजरत अबू बक्र सिद्दीक ने उनकी विधवा से शादी कर ली थी।

8. क़ैदीयों के परिवार की कफालत (देखभाल) करना

एक क़ैदी के परिवार की देखभाल करना अजर और सवाब में एक मुजाहिद के परिवार की देखभाल करने के बराबर है। यह अमल भी इतना ज़्यादा सार्वजनिक करने की आवश्यकता है, कि जल्दी वह समय आ जाऐ, जब मुजाहिद घर वालों को छोड़कर जिहाद के लिए निकले, तो उसे इस बात की कोई चिंता नहीं हो, कि अगर वह अल्लाह के रास्ते में शहीद हो जाए, या गिरफ्तार हो जाए, तो उस के परिवार का क्या होगा। बल्कि उसका यह विचार बन जाए, कि उस के पीछे उस के परिवार की देखभाल के लिए हजारों, लाखों मुसलमान नहीं, बल्कि पूरी उम्मत मौजूद है।

9. मुजाहिदीन को ज़कात दे कर जिहाद में भाग लेना!

ज़कात के आठ मसारिफ हैं। कुरान कहता है।

اِنَّمَا الصَّدَقٰتُ لِلْفُقَرَاءِ وَالْمَسٰكِيْنِ وَالْعٰمِلِيْنَ عَلَيْهَا وَالْمُؤَلَّفَةِ قُلُوْبُهُمْ وَفِي الرِّقَابِ وَالْغٰرِمِيْنَ وَفِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَابْنِ السَّبِيْلِ فَرِيْضَةً مِّنَ اللّٰهِ

सदक़ात (ज़कात) केवल फकीरों, और मिस्कीनों के लिए है,और उन के लिए जो जक़ात के काम करते हैं,और उन के लिए है जिन का हृदय जीतना ज़रुरी हो,और गर्दनों को छुड़ाने, और जिन के ऊपर कर्ज़ हो उनकी सहायता करने के लिए, और अल्लाह के रास्ते में, और मुसाफिरों की सहायता के लिए।" (तोबा: 60)

मुफस्सिरीन के नज़दीक 'फी सबीलिल्लाह' का शब्द अगरचे सामान्य है। लेकिन यह विशेष तौर पर मुजाहिदीन के लिए प्रयोग होता है। अबु बक्र बिन अरबी रहिमहुल्लाह जो मालिकी मस्लक के हैं, कहते हैं कि, इमाम मालिक रहिमहुल्लाह ने फरमाया कि" फी सबील्लाह"बहुत से हैं, लेकिन इस में कोई मतभेद नहीं, कि इस आयत में फी सबीलिल्लाह से तात्पर्य मुजाहिदीन हैं।"

इमाम नववी रहिमहुल्लाह अपनी पुस्तक किताबुल मनहज में लिखते हैं कि, "जक़ात की धनराशि के पात्र मुजाहिदीन भी हैं। इसलिए मुजाहिदीन इस धनराशि को यात्रा और लड़ाइयों के खर्च के अलावा अपने घरवालों पर भी खर्च कर सकते हैं।

ज़कात की धनराशि का सब से अच्छा मसरफ (खर्च करने की जगह) मुजाहिदीन हैं।

अफसोस! आज बहुत कम लोग मुजाहिदीन को अपनी जक़ात की धनराशि देते हैं। इस का कारण ये है कि, हमारे समाज मे यह अफवाहें फैल गई हैं, कि जक़ात केवल ग़रीब को दी जा सकती है, हालांकि यह केवल शैतानी चाल है। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया "सदक़ा किसी मालदार व्यक्ति को नही दिया जा सकता सिवाऐ पांच परिस्थितियों के, उनमें से एक आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के फरमान के अनुसार अल्लाह के रास्ते के मुजाहिद भी हैं। मुजाहिदीन जक़ात के तो हर स्थिति में पात्र हैं। लेकिन आज मुजाहिदीन इसके और अधिक योग्य हो जाते है, क्योंकि जक़ात के योग्य व्यक्ति आठ प्रकार के हैं। जिन में चार हालतें तो खुद मुजाहिदीन पर पूरी उतरती हैं।

(1) ये फुक़रा हैं (2) ये मिसकीन हैं (3) ये मुसाफिर हैं और (4) ये अल्लाह के रास्ते के मुजाहिद हैं।

इस लिए आप अपनी जक़ात मुजाहिदीन को दें और दूसरों को भी इस ओर ध्यान दिलाएं।

10. मुजाहिदीन के लिए चिकित्सा सुविधा का प्रबन्ध करना!

आज मुजाहिदीन को लगभग हर प्रकार की चिकित्सा सुविधा (medical help) की आवश्यकता है। जिहाद में तो हर समय चिकित्सकों(डॉक्टरों) की बहुत अधिक आवश्यकता है। लेकिन अधिकतर समय अस्पताल और चिकित्सालय की भी आवश्यकता होती है। पूरी मुस्लिम उम्मत में हज़ारो विशेषज्ञ डोक्टर मौजूद हैं। लेकिन कितने अफसोस की बात है कि हमने घायल मुजाहिदीन के बारे में ऐसी-ऐसी घटनाऐं भी सुनी हैं, कि उनको साधारण ज़ख़्म लगे लेकिन समय पर चिकित्सा-सहायता या डाक्टर के न मिलने के कारण वो ज़ख़्म फैलते गऐ, यहाँ तक कि इतने छोटे ज़ख़्म फैल जाने के कारण कुछ मुजाहिदीन शहीद हो गए। इस लिए विशेषकर वह मुसलमान जिन्होंने मेडिकल का ज्ञान सीखा है और दावा करते हैं, कि वह इस ज्ञान से उम्मत को लाभ पहुंचाना चाहते हैं। उन्हें ज़ख़्मी मुजाहिदीन पुकार रहे हैं ।

आप और आप का चिकित्सा ज्ञान(medical education) कहां है? खत्ताब (चेचेनिया के महान और बहादुर अरब सालार) के बारे में बताया गया है, कि एक बार वह रूसियों से जंग के बीच में ज़ख़्मी हो गए। लेकिन उस समय कोई भी मुसलमान डाक्टर न मिल सका, जो उन का इलाज कर सके। इस लिए उन को रेडक्रोस के एक केंद्र मे ले गए और वहां काफिर डाक्टरों और कार्यकर्ताओं को बन्दूक़ के निशाना पर रखकर अपने मुजाहिद कमांडर का इलाज करवाया। इस के अलावा दवाऐं और विभन्न मेडिकल सुविधाऔं का प्रबन्ध करना आवश्यक होता है। हर वह मुसलमान जो इस मैदान से सम्बन्ध रखता है। वह आगे बढ़े, और अपने दायित्व को पूरा करे। क्योंकि इस विभाग में मुजाहिदीन की सहायता करना बहुत ही जरूरी है। और आप को विश्वास रखना चाहिए कि अगर आप केवल अल्लाह तआला के लिए मुजाहिदीन का ख्याल रखेंगे तो अजरे अज़ीम के हक़दार बनेंगे। और इसमें कोई शक नहीं कि आप को उस मुजाहिद के जिहाद के बराबर या उससे भी अधिक अजर मिल जाए।

11. मुजाहिदीन का साहस बढ़ाना।

जब मुजाहिदीन यह सुनते हैं कि, उलमा जिहाद के समर्थन में हैं, कस्जिदों में उनके लिए दुआऐं की जाती हैं। और मुसलमानों की बहुमत उनका सम्मान करती है, तो इस से इन मुजाहिदीन को हिम्मत तथा हौसला मिलता है। और जिहाद में इन के पैर और मज़बूत हो जाते हैं। उसके विपरीत जब मुजाहिदीन यह देखते हैं कि उलमा उनके विरुद्ध हैं मस्जिदों के इमाम जिहाद से विमुख हो चुके हैं। और मुसलमानों की बहुमत को झूठ बोल-बोल कर धोखा दिया गया है, तो हम अनुमान नहीं लगा सकते इस धोखा भरे व्यवहार से मुजाहिदीन को कितना कठोर दुःख होता है।

हज़रत अबु बक्र सिद्दीक़ रजियल्लाहु अन्ह ने ख़लीफा बनने के बाद मुजाहिदीन का पहला लश्कर हज़रत उसामा रजियल्लाहु अन्ह की अध्यक्षता में भेजा, और उनका साहस बढ़ाने के लिए खुद पैदल चलकर मदीना की अंतिम बस्ती तक गए। इस लिए आप भी यथासम्भव कोशिश करें कि, उन का साहस बढ़े। और उन के सम्मान में कमी न आऐ।

12. मुजाहिदीन का बचाव करना और उन के समर्थन में बोलना

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया “जो किसी मुसलमान भाई के सम्मान की रक्षा करता है। अल्लाह तआला क़्यामत के दिन उस के चेहरे को दोज़ख की आग से बचा लेगें। (तिर्मिज़ी) आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह भी फरमाया “जो मुसीबत के समय किसी मुसलमान की सहायता न करे, विशेषकर उस समय जब उसके प्रतिष्ठा को बरबाद किया जा रहा हो, और उस की पवित्रा पर प्रशन उठाए जा रहे हों, तो ऐसे व्यक्ति की अल्लाह उस समय सहायता नही करेगा, जब खुद उस को मदद की आवश्यकता होगी। और जो किसी मुसलमान की ऐसे समय में मदद करेगा, जबकि उस की इज़्ज़त बरबाद हो रही हो, और उस की पवित्रा पर प्रशन उठाए जा रहे हों, तो अल्लाह ऐसे समय में उस की मदद करेगा, जबकि उस को मदद की आवश्यकता होगी।” (अबु दाऊद)!

इस लिए यह हमारा इस्लामी दायित्व है, कि हम उन का बचाव करें, जो इस्लाम और पूरी उम्मत का बचाव कर रहे हैं। क्योंकी इस समय सारी मीडिया, और प्रकाशन संस्थाएं सरकार के साथ मिल कर मुजाहिदीन के विरोध में अप्रमाणिक, झूठी, गुमराह करने वाली खबरें प्रकाशित करके उम्मत को धोखा दे रही हैं। आप जिस महफिल मे देखें, कि मुजाहिदीन के खिलाफ बातें की जा रही हैं, वहाँ उन के हक़ और बचाव में ज़रूर बोलें। अन्यथा अगर हम में सच बोलने का साहस नहीं है तो कम से कम चुप रहना बेहतर है। कभी-कभी हमारे मुंह से वह बातें निकलती हैं, जिन से अल्लाह के रास्ते के उन मुजाहिदीन का बचाव होने के बजाए कुफ्फार का बचाव होता है। इसलिए हमें अपने कार्य ही से नहीं बल्कि अपने शब्दों से भी मुजाहिदीन का बचाव करना होगा। और अपने किसी कार्य या शब्दों से अल्लाह के दुश्मनों को लाभ नहीं पहुंचाना चाहिए।

13. मीडिया के झूठ को बेनक़ाब करना

हम में से अधिकतर मुसलमानों की किसी भी विषय पर वो सोच बन चुकी है जो पश्चिमी मीडिया दिखाता है। जबकि अल्लाह ताला का फरमान है!

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِن جَاءَكُمْ فَاسِقٌ بِنَبَإٍ فَتَبَيَّنُوا أَن تُصِيبُوا قَوْمًا بِجَهَالَةٍ فَتُصْبِحُوا عَلَىٰ مَا فَعَلْتُمْ نَادِمِينَ

अनुवाद:- ऐ ईमान वालो! अगर कोई फासिक तुम्हारे पास ख़बर लाए तो छानबीन कर लिया करो ऐसा न हो की तुम भूल से किसी समुदाय को हानि पहुँचा बेठो और फिर अपने किये पर तुम पछताओ।” (अल हुजरात: 6)

ये आदेश तो फासिक के बारे में है, तो अगर फासिक के बजाए काफिर या मुर्तद लोग यह ख़बर हम तक पहुंचा रहे हों, तो उस का हुक्म क्या होगा। यह मीडिया नहीं है वास्तव में झूठों का पुलंदा है । मुजाहिदीन से सम्बन्धित कोई ख़बर या विश्लेषण हो तो वो पूर्ण रूप से सच पर परदे डालकर पेश की जाती है क्या हमें दिखाई नहीं देता कि जब कुफ्फार मुसलमानों का नरसंहार करते हैं। और अपने ही बनाए हुए लड़ाइयों के कानूनों का उल्लंघन करते हैं, तो नागरिकों की हलाकत पर पर्दा डालने के साथ-साथ उस काम के जायज होने की भी दलील घड़कर लाते हैं। लेकिन लड़ाई के दौरान अगर कोई नागरिक मुजाहिदीन की गोलियों का निशाना बन जाए, तो मुजाहिदीन को आतंकवादी फसादी कह कह कर दुनिया को धोखा देते हैं। मीडिया की भूमिका इस संबंध में इतना प्रभावशालि है, कि पूरी दुनिया में झूठ फैल जाता है। और सच को अपनी सफाई का अवसर भी नही मिल पाता। और उम्मते मुस्लिमा की बहुमत उसके धोखे में आ जाती है।

यह वास्तविकता है कि मीडिया मुजाहिदीन को बदनाम करने के लिए तरह तरह के धोखे देता है। इन के बारे में झूठी और अप्रमाणिक ख़बरें खुद घड़ता है। उनकी गलतियों को कई गुना बढ़ाकर दिखाता है। संख्याओं के मामला में हमेशा झूठ से काम लेता है। उनके बीच मतभेद उत्पन्न करने के लिए अधिकतर उल्टी सीधी बातें उनसे जोड़ता है। मुजाहिदीन के मार्गदर्शकों पर कीचड़ उछालता है। यह मीडिया ही है जो उलमा ए हक के हक बात बोलने को जनता के सामने पेश नहीं होने देता। जबकि जिहाद के विरोधियों और बुरे उलमा को खूब अवसर प्रदान करता है।

तो ऐ मेरे प्यारे भाईयो! आप का ये दायित्व है, मुसलमानों को इससे संबंधित बताऐं। और मुसलमानों को समझाएं कि मीडिया के इस चरित्र को हमेशा अपने दिमाग में रख कर मुजाहिदीन के बारे में कोई राय बनाऐं। हमें मीडिया की ख़बरो पर जो मुजाहिदीन से सम्बन्धित हों भरोसा नही करना चाहिए, जब तक मुजाहिदीन के प्रामाणिक सूत्रों द्वारा उस की पुष्टी न हो जाए। क्योंकि फासिक की ख़बर पर भरोसा न करने का आदेश खुद कुरान देता है।

याद रखें आप उनकी ऐसी किसी बात पर विश्वास नहीं करें, जो इस्लाम और मुजाहिदीन से सम्बन्धित हो। क्योंकि उनके बारे में उनका यह विशेष व्यवहार है

14. मुनाफ़िक़ीन की पहचान करना

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के युग में मुनाफिकीन मुस्लिम समाज में बहुत खतरनाक (संकट जनक) समझे जाते थे, और निसंदेह आज भी ऐसे ही हैं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ईमान वालों के सामने उनकी निशानियां बयान करते हैं, ताकि उनपर पड़े हुए झूठ के परत उतर जाएं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़माना में काफिरों के विरुद्ध लड़ाई हथियार द्वारा लड़ी जाती थी। जबकि मुनाफिकों से कुरआन के स्पष्ट तर्कों द्वारा बहस की जाती थी। और उनको ईमान की कसौटी पर परख कर सबके सामने उसका मुनाफिक होना स्पष्ट किया जाता रहा। मुनाफिकीन मजहब के पर्दों में अपने आपको छुपा कर रखते हैं। ताकि अपने ज़हरीले विचार फैलाएं। इसलिए उनसे लड़ने का सही तरीका यह है, कि अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बताई हुई निशानियों द्वारा उनका झूठ बे नकाब कर दिया जाए। आज भी उनके विरुद्ध हमारे पास बुनियादी हथियार कुरआन और सुन्नत हैं। उनमें से कुछ लोग बहुत ही दिल को भाने वाला भली बातें करते हैं, यह दिलों को लुभाने वाले भी हो सकते हैं। लेकिन वास्तव में भीतर से खोखले होते हैं। इसलिए उनकी झूठी इल्मी शान और उनके शैतानी विचार कुरआन द्वारा आसानी से बे नकाब किए जा सकते हैं। अल्लाह ताला का फरमान है:

وَإِذَا رَأَيْتَهُمْ تُعْجِبُكَ أَجْسَامُهُمْ وَإِن يَقُولُوا تَسْمَعْ لِقَوْلِهِمْ كَأَنَّهُمْ خُشُبٌ مُّسَنَّدَةٌ يَحْسَبُونَ كُلَّ صَيْحَةٍ عَلَيْهِمْ هُمُ الْعَدُوُّ فَاحْذَرْهُمْ قَاتَلَهُمُ اللهُ أَنَّىٰ يُؤْفَكُونَ

अनुवाद:- "तुम उन को देखोगे तो ये बड़े शानदार नज़र आऐंगे, वह बोले तो तुम उन की बात सुनते रह जाओ। लेकिन ये ऐसा है जैसे लकड़ी के तखते दीवार से चुनकर रख दिये जाएं। हर ज़ोर की आवाज़ को अपने विरोध में समझते हैं । ये पक्के दुश्मन हैं इन से बच कर रहो । अल्लाह इन्हें बरबाद करे। इन्हें किधर से उल्टा फिराया गया है" । (मुनाफिकून : 4

एवं लड़ाइयों में बहुत ही व्यस्त मुजाहिदीन को मुस्लिम समाज के इन आस्तीन के सांपों से प्रत्यक्ष सामना नहीं है। इसलिए मुनाफिकीन की पहचान करके मुजाहिदीन तक उनकी जानकारियां उपलब्ध कराना भी आपकी जिम्मेवारी है। ताकि मुजाहिदीन उन मुनाफिकों के संबंध में कोई स्पष्ट रणनीति बना सकें। यहां एक बात स्पष्ट करना जरूरी है, कि जो मुनाफिकीन के विरुद्ध हथियार प्रयोग करने और उनके विरुद्ध लड़ाई करने के बारे में एक भ्रांति पर आधारित है। पाकिस्तान में कुछ दीनी हल्के और उलमा ए सू मुजाहिदीन का पाकिस्तानी मुनाफिकों से लड़ाई करने पर यह कहकर एतराज करते हैं, कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़माना में मुनाफिकीन के विरुद्ध हथियार से जिहाद नहीं हुआ था। अतः मुनाफिकों के विरुद्ध हथियार उठाना इस्लाम के विरुद्ध है हालांकि वह इस अंतर को भुला बैठे हैं, जो उस समय के और आजके मुनाफिकों के बीच पाया जाता है।

पहला बिंदु

* रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़माने में मुनाफिकीन घृणा के बावजूद इबादतें भी करते थे। यहां तक कि उन्हें कभी-कभी जिहाद के मैदान में भी जाना पड़ता था। लड़ाई के बीच वह मुजाहिदीन की पंक्तियों में सम्मिलित होते थे, न कि काफिरों की सेना का अंग होते।

* चुनांचे उस युग में उन मुनाफिकों ने कभी भी मुसलमानों के विरुद्ध न तो खुद लड़ाई की ,और न ही काफिरों के साथ मिलकर लड़ाइयों में भाग लिया।

* मुनाफिकीन ने कभी किसी एक मुसलमान का भी कत्ल नहीं किया था।

उसके बिल्कुल विपरीत आज के मुनाफिकीन काफिरों की सेना के अंग भी हैं। और मुजाहिदीन के विरुद्ध लड़ाइयां लड़ने की शुरुआत उन्हीं की ओर से हुई है। और पता नहीं अब तक कितने मुवहहिद मुसलमानों को कतल कर चुके हैं। ऐसे मुनाफिकों के साथ तलवार के साथ जिहाद का हुक्म अल्लाह ने खुद कुरआन में दिया है। सूरह निसा के बारहवें रुकू में अल्लाह ने तीन गिरोहों का चर्चा किया है। और इस बात को ना पसंद किया है कि मुनाफिकों के बारे में दो विचार पाए जाएं।فمالكم فى المنافقين فئتين...अनुवाद:-तुम्हें क्या हो गया है कि मुनाफिकों के बारे में तुम्हारे बीच दो विचारें हैं, एक गिरोह से हाथ रोककर रखने का हुक्म दिया है, इसलिए कि वह मुसलमानों से नहीं लड़ते। जबकि दो गिरोह ऐसे हैं जो मुसलमानों से लड़ाइयां लड़ते हैं, और उनको बे दरेग कत्ल करते हैं। अल्लाह ने उनसे लड़ने और उन्हें कत्ल करने का हुक्म दिया है। एक गिरोह के बारे में तो बहुत ही कठोर शब्दों में इरशाद हुआ, कि जान लो कि ऐसे मुनाफिकों के बारे में हमने तुमको खुली छूट दे दी है।

كُلَّمَا رُدُّوٓاْ إِلَى ٱلۡفِتۡنَةِ أُرۡكِسُواْ فِيهَاۚ فَإِن لَّمۡ يَعۡتَزِلُوكُمۡ وَيُلۡقُوٓاْ إِلَيۡكُمُ ٱلسَّلَمَ وَيَكُفُّوٓاْ أَيۡدِيَهُمۡ فَخُذُوهُمۡ وَٱقۡتُلُوهُمۡ حَيۡثُ ثَقِفۡتُمُوهُمۡۚ وَأُوْلَٰٓئِكُمۡ جَعَلۡنَا لَكُمۡ عَلَيۡهِمۡ سُلۡطَٰنٗا مُّبِينٗا

अनुवाद:- यह मुनाफिकीन कभी फितने का अवसर पाएंगे, उसमें कूद पड़ेंगे। यह लोग अगर तुम्हारे मुकाबला से पीछे न हटें, और शांति के साथ रहने को तैयार न हों, और तुम पर अपने हाथ न रोकें, तो तुम उन्हे पकड़ो, और जहां मिलें, कत्ल कर दो। हमने तुम्हें इसका खुला अधिकार दे दिया है।

दूसरा बिंदु

सभी इस्लामी फुकहा इस बात पर सहमत हैं, कि मुसलमानों के विरुद्ध काफिरों की सहायता करना नवाकिजे इस्लाम(इस्लाम से निकाल देने वाले, काफिर बनाने वाले) कामों में से है। अर्थात ऐसा काम करने वाला इस्लाम से निकल जाता है और मुर्तद्द कहलाता है। स्पष्ट है इस शरई व्याख्या के बाद वह आपत्ति ही गलत हो जाती है। कि मुनाफिकीन के खिलाफ लड़ाई नहीं की जा सकती। क्योंकि यह सैनिक मुनाफिक ही नहीं, अब मुर्तद्द हो चुके हैं। जो काफिरों के कहने पर मुजाहिदीन के खिलाफ लड़ते हैं। लेकिन अगर कोई उसे मुर्तद्द स्वीकार न भी करे तो भी

सूरह निसा की आयत उसके संतोष के लिए काफी है। जिसमें ऐसे मुनाफिकों के विरुद्ध लड़ने का हुक्म मुसलमानों को अल्लाह ने दिया है।

15. दूसरों को जिहाद पर उभारना।

दूसरों को भलाई की तरफ बुलाना वैसे भी एक उत्तम इबादत है। क्योंकि यह अम्र बिल मारुफ व नह्य अनिल मुन्कर में से है। लेकिन किसी को जिहाद पर उकसाना और उभारना तो वह कार्य है, जिस का खास तौर पर हमें आदेश दिया गया है। कुरान में है।

يا أَيُّهَا النَّبِيُّ حَرِّضِ الْمُؤْمِنِينَ عَلَى الْقِتَالِ

अनुवाद:- ऐ नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मोमिनीन को जिहाद पर उभारिये। (अनफाल : 65)

अल्लाह ताला का यह भी फरमान है।

فَقَٰتِلْ فِي سَبِيلِ اللهِ لَا تُكَلَّفُ إِلَّا نَفْسَكَ ۚ وَحَرِّضِ ٱلْمُؤْمِنِينَ ۖ عسَى اللهِ أَن يَكُفَّ بَأْسَ ٱلَّذِينَ كَفَرُوا ۚ والله أَشَدُّ بَأْسًا وَأَشَدُّ تَنكِيلًا

ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आप अल्लाह के रास्ते में लड़ाई करें। आप पर अपने सिवा किसी दूसरे की ज़म्मेदारी नही है। और मोमिनीन को जिहाद के लिए प्रोत्साहित कीजिए। जल्दी ही अल्लाह काफिरों का बल तोड़ देगा, अल्लाह सब से ज़्यादा ताक़त वाला, और अज़ाब देने में सख़्त है। (निसा : 84)

16. मुजाहिदीन के राज़ों(भेदों) की रक्षा करना

हमें अपनी जीभों को नियन्त्रण में रखने की आवश्यकता है। कभी-कभी हम कुछ ऐसे शब्द अपनी ज़बान से निकाल देते हैं, हमारे न चाहते हुए भी जिसके कारण हमारे मुजाहिदीन ख़तरे में आ जाते हैं। हर मुसलमान को राजों के मामले में बहुत सावधानी और गुप्तता से काम लेने की आदत डालनी चाहिए। राज़दारी के सम्बन्ध में सीरत में भी बहुत सारी बातें मिलती हैं। उदाहरणतया सहाबा रजियल्लाहु अन्हुम अजमईन का अपनी पत्नी से वह बात छुपाना, जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उन्हें राज़ के रूप में बताते थे। किसी सहाबी या किसी सहाबिया का राज़ बता देने पर, मुहासबा (पूछ-गछ) करना। बहुत से ऐसे मामलात होते हैं। जिन्हें अपने बहुत ही क़रीबी साथी, पति या पत्नी, बच्चों और भाइयों से भी छुपाना आवश्य होता है। क्योंकि हो सकता है कि, उनके द्वारा राज़ का दूसरों को पता चल जाए। और मुजाहिदीन के साथ कोई बड़ी घटना घट जाए। लड़ाइयों से संबंधित जानकारियां तो बहुत गुप्त होती हैं। लेकिन आज के ज़माने में जब कि कुफ्फार की जासूसी ऐजेंसियां मुजाहिदीन का पता लगाने के लिए हर प्रकार के साधन प्रयोग कर रहे हैं। इसका महत्त्व बहुत अधिक बढ़ गया है, कि राजदारी की आदत सार्वजनिक हो। "जितनी जानकारी की आवश्यता हो उतनी ही जानी जाए" के फार्मूला पर अमल किया जाए। यह

बात हमारी जानकारी में आई है, कि अपने ही ईमानदार साथियों की खुली जबान होने के कारण कभी-कभी मुजाहिदीन को ऐसी क्षति पहुंची है, जिसकी भरपाई असंभव है।

मैं यह भी स्पष्ट कर दूं, कि अल्लाह के दुश्मन अपनी गुप्त कारवाइयों में इतने सफल हैं, कि हमारे ही बीच में उनके जासूस मौजूद होते हैं। और बहुत से अनुभव इस के गवाह हैं, कि यह जासूस उलमा और मुजाहिद कमांडर के रूप में भी पाए गए हैं। अतः आपको मुजाहिदीन से संबंधित खबरों और जानकारियों में बहुत अधिक सावधानियां बरतनी होंगी। मस्जिदों के इमाम उलमा और दीनी मार्गदर्शकों को उस समय तक किसी जानकारी में शरीक न करें, जब तक कि उनके बारे में पूर्णतः विश्वास न हो जाए।

दूसरी बात मैं तमाम मुसलमानों को यह बताना चाहता हूँ, कि कुफ्फार के लिए मुसलमानो के खिलाफ जासूसी करना शरीअत के अनुसार कुफ्र के सिवा कुछ भी नहीं है। अतः दोजख में अपना सीट कन्फर्म करने से बचें। अल्लाह फरमाते हैं। من يتولهم فهو منهم “ जो भी उन का साथ देगा वह भी उन्ही में से है ” (माइदा : 51)

17. मुजाहिदीन के लिए दुआ करना

सच तो यह है कि हमें सच्चे दिल से की गई दुआ की शक्ति का अनुमान ही नहीं है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि “मेरी उम्मत को जो जीत मिली है, वह इस उम्मत के कमज़ोर लोगो के कारण से मिली है। इस हदीस में दुआओं की ताक़त के बारे में बताया गया है। अर्थात वह कमज़ोर लोग जो किसी शरई कारण, या कमज़ोरी के कारण, खुद लड़ाई में भाग नही ले पाए । लेकिन रूची के कारण कभी जिहाद से ध्यान नहीं हटा और पीछे बैठ कर मुजाहिदीन की सफलता के लिए दुआ करते रहे।

इसलिए ऐ मेरे मुसलमान भाईयों! मुजाहिदीन के लिए निरंतर दुआ किया करें ताकि अल्लाह उनको विजय और गलबा प्रदान करे। विशेषकर नमाज़ में सजदों में मुजाहिदीन की सफलता के लिए जरूर दुआ किया करें। क्योंकि मुसलमान उस समय अल्लाह से सब से अधिक क़रीब होता है। एक महत्वपूर्ण दुआ जिससे आजकल लापरवाही बरती जा रही है वह दुआए कुनूत है। मस्जिद के इमाम फज्र की नमाज़ में “ दुआऐ क़ुनूत” को पढ़ा करें विशेष रूप से उस समय जब मुजाहिदीन को बड़ी जंग का सामना हो। उन्हें याद दिलाएं कि यह अल्लाह के रसूल की सुन्नत है। अफसोस है आज मस्जिदों के इमान इसको कोई महत्त्व नहीं देते।

एक बार लड़ाई शुरू होने की मूल स्थित से पहले मुजाहिद कमान्डर ने अपने मुजाहिद साथीयों से पूछा कि "मुहम्मद बिन वसी क्या कर रहे हैं।" मुहम्मद बिन वसी रहिमहुल्लाह अपने समय के बड़े आबिद और मुत्तक़ी आदमी समझे जाते थे। मुजाहिदीन ने उन्हें बताया कि वह असमान की ओर हाथ उठा कर दुआ कर रहे हैं। मुजाहिदीन के सालार ने कहा कि “ बिल्कुल उस समय जब दुश्मन से लड़ाई का सामना होने वाला हो, तो मुझे एक हज़ार मुजाहिदीन के मिलने से, वह एक उंगली ज़्यादा पसंद होगी, जो अल्लाह की बारगाह मे बुलंद हो कर मुजाहिदन की सफलता के लिए दुआ कर रही हो।”

18. मुजाहिदीन के प्रामाणिक समाचारों को ढूंढकर उनको फैलाना

मुजाहिदीन की खबरों को ढूंढकर उन्हें फैलाना इसलिए जरूरी है, कि

* यह अमल आपको जिहाद से जोड़े रखेगा। और आप खुदको जिहाद से दूर नहीं पाएंगे।

*इसके द्वारा आप पूरी उम्मते मुस्लिमा के साथ मजबूत संबंध का आभास करेंगे।

* जब आपके सामने मुजाहिदीन की बहादुरी के वाकियात आएंगे, तो आपको जिहाद में अमली तौर पर भाग लेने की चाहत होगी, और उसके लिए साहस मिलेगा।

* जब आपके सामने शहीदों के वाकियात आएंगे, तो आपके दिल में भी शहादत की तीव्र इच्छा मचलने लगेगी।

* मुजाहिदीन की खबरें सुनने से आपको पता चलेगा, कि यह उम्मत विजय और सफलता की ओर आगे बढ़ रही है। और यही गिरोह ताइफए मंसूरह है, जिसका हदीस में चर्चा किया गया है। हमने देखा कि जिस किसी को जिहाद की सही खबरें नहीं पहुंचती हैं, वह जिहाद से संबंधित गलत विचार अपनाता है। और विश्लेषण भी गलत करता है। कि मुजाहिदीन अकारण अंधेरे में तीर चला रहे हैं, जिसमें अपनी जानें गंवाने के अलावा कुछ प्राप्त नहीं हो रहा है। इस उम्मत के नेक युवाओं को बरबाद किया जा रहा है। और इस लड़ाई में उम्मत को कोई भलाई नहीं पहुँचने वाली। हालांकि उनका यह विचार बिल्कुल गलत है। और परिस्थितियां उसके बिल्कुल विपरीत हैं, अल्हमदु लिल्लाह। यह गलत विचार इस कारण से फैला है, कि उन्हें जिहाद की सही खबरें नहीं पहुंच रही हैं।

* इन खबरों से जिहाद के फिक्ही मसाइल की भी जानकारी होती है। अर्थात जिहाद के किसी शरई मसअले में मुजाहिदीन किस प्रकार अमल करते हैं, उसका अमली उदाहरण सामने आने से वह मसअला भली-भाती स्पष्ट होता है। क्योंकि कोई मसअला जो किताबों में लिखा हुआ है, उस समय तक स्पष्ट नहीं होता है, जब तक कि उसका अमली उदाहरण सामने न आ जाए।

मैं यहां बिंदु सं० १३ को दुहराना चाहता हूं। मैने कहा था, आपको केवल प्रामाणिक सूत्रों से पराप्त होने वाली सही खबरें फैलानी होंगी। और अफवाहों से बचना होगा। क्योंकि अफवाहें फैलाना मुनाफिकों का काम होता है। अल्लाह फरमाते हैं।

وَإِذَا جَاءَهُمْ أَمْرٌ مِّنَ الْأَمْنِ أَوِ الْخَوْفِ أَذَاعُوا بِهِ ۖ وَلَوْ رَدُّوهُ إِلَى الرَّسُولِ وَإِلَىٰ أُولِي الْأَمْرِ مِنْهُمْ لَعَلِمَهُ الَّذِينَ يَسْتَنبِطُونَهُ مِنْهُمْ ۗ

यह लोग जब संतोषजनक और भयानक खबरें सुनते हैं, तो फैला देते हैं। और अगर यह उसे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम या जिम्मेदारों तक पहुंचाते, तो वह बात ऐसे लोगों की जानकारी में आ जाती, जो उनके बीच में इस बात की क्षमता रखते हैं, कि उससे सही परिणाम निकाल सकें।(अन-निसा 83)

19. मुजाहिदीन के आलिमों और उनके मार्गदर्शकों के लेखों को फैलाना

दुर्भाग्यवश हमने सुना, कि कुछ मुसलमान मुजाहिदीन पर यह आरोप लगाते हैं, कि मुजाहिदीन के पास उनका समर्थन करने वाले आलीमों की कमी है। चुनांचे उनके पास कोई स्पष्ट कार्य-योजना भी नहीं है। और जो कुछ मुजाहिदीन कर रहे हैं, वह काफिरों के विरुद्ध उनका स्वाभाविक प्रतिक्रिया(रिएक्शन) है। मैं कहूंगा यह आरोप वास्तविकता के बिल्कुल विपरीत है। मुजाहिदीन के पास बड़ी संख्या में उलमा मौजूद हैं। और ऐसे तिक्षन-बुद्दि व्यक्तियों की भी कमी नहीं है, जो लड़ाई की रणनीति बनाते हैं। जो न केवल मुजाहिदीन के समर्थक हैं, बल्कि अल्लाह की कृपा से कुछ उन में से जिहाद के सर्व-प्रथम मोर्चों में उनके साथ मौजूद हैं। यह बात याद रखने की है, कि यह मार्ग हक का मार्ग है। इसलिए बहुत से उलमा और ऐसे योद्धक कमांडर शहीद कर दिए गए हैं। या जेलों में कैद हैं। या भूमिगत अर्थात गुप्त जीवन यापन पर मजबूर हैं। उसके बावजूद मुजाहिदीन के शरई और योद्धक मार्गदर्शन के लिए बहुत सारी जिहादी सामग्रियां मौजूद हैं। मैं स्पष्ट करता चलूं, कि जिहादी उलमा ने लेख शुद्धतः शरीयत की रोशनी में लिखे हैं। यह जिहादी उलमा उन उलमाए सू (बुरे उलमा) की तरह नहीं हैं, जो शरीयत को खिलौना समझकर अपनी मरजी से उसमें तहरीफ करते हैं। और अल्लाह की ओर से है, कहकर अपने टेढ़े मेढ़े फतावा जारी कर देते हैं। उस के विपरीत इन जिहादी आलिमों ने स्पष्ट कर दिया है, कि यह अल्लाह के अलावा किसी से नहीं डरते। किसी दूसरे को प्रसन्न करने के लिए अल्लाह को अप्रसन्न (नाखुश) नहीं करते। उनके लेख अल्लाह और रसूल की बातों से, या फिर हमारे गुजरे हुए उलमा जैसे इब्ने हजर, इमाम नववी, इमाम कुर्तुबी, इब्ने कसीर, इमाम इब्ने तैमिया, और चारों अइम्मा (अबू हनीफा, मालिक, शाफिई, अहमद बिन हंबल) की बातों से सजी हुई रहती हैं। शरीयत में कोई ऐसी चीज नहीं है, जिसे यह उलमा छुपाते हों। यही कारण है कि उनका लिटरेचर बहुत ही प्रभावशाली और तर्क आधारित होता है।

यह एक वास्तविकता है कि कोई प्रकाशन संस्था और कोई मीडिया उन तहरीरों के प्रकाशन के लिए तैयार नहीं होता। जिस कारण से यह सब लेख नहीं फैल सके हैं। चुनांचे यह काम भी दूसरे बहुत से कामों की तरह मुजाहिदीन के कांधों पर हैं। जिसमें बहुत सी कठिनाइयां हैं। अतः मैं आपसे निवेदन करूंगा, कि मुजाहिदीन के इस काम में भरपूर सहायता करें। सामान्य मुसलमान इस से संबंधित सहायता इस प्रकार प्रदान कर सकते हैं।

* हर किताब या सीडी जो आप तक पहुंचे उसे अपने दोस्तों और परिवार वालों तक पहुंचाना।

* किताबें ऑडियो वीडियो इंटरनेट पर अपलोड करना।

* ऐसी वेबसाइट बनाना जिस में उन किताबों ऑडियोज वीडियोज तक पहुंचने की (link) प्रदान की जाती हो।

* ऐसी वेबसाइट्स के बारे में लोगों को सूचित करना उसके विभिन्न माध्यम हो सकते हैं। जैसे मौखिक, लिखित, प्रचार, ईमेल एसएमएस इत्यादि

* कंप्यूटर से प्रिंट आउट लेकर या फोटो कॉपी निकाल कर बंटवाना।

* इसी प्रकार कंप्यूटर सीडीज बनाकर बंटवाना।

*ईमेल द्वारा जानकारी को फैलाना।

* मस्जिदों में ऐसी जानकारियां उपलब्ध कराना जैसे स्टीकर या छोटा बैनर लगाना और मस्जिदों में किताबें और पैंफलेट बंटवाना।

* विभिन्न दीनी और सांस्कृतिक समारोहों में यह सामग्रियां बंटवाना।

* ऐसे स्टडी सर्किल बनाना जहां यह सामग्रियां इकट्ठा होकर पढ़ी जाती हों।

20. उलमा का मुजाहिदीन के हित में फतवा जारी करना।

निसंदेह इस गए गुजरे ज़माना में भी कहीं न कहीं ऐसे हक वाले उलमा जरूर मौजूद हैं, जो हमेशा सच बात करते हैं। ऐसे उलमा को ढूंढ कर उनका साहस बढ़ाना चाहिए, कि बातिल शक्तियों से भयभीत न हों। जिहाद और मुजाहिदीन के समर्थन में फतावा जारी करके इस्लामी जिहाद में शामिल हो जाएं। फिर उन उलमा के फतावा सार्वजनिक रूप से फैलाए जाएं। हमारे बहुत से भाई ,बहन दिल से मुजाहिदीन का समर्थन करते हैं। मगर जिहाद में खड़ा होने के लिए उन्हीं उलमा के विचार जानने के इंतजार में हैं। कुछ मुफ्ती हजरात भी अपनी निजी सभाओं में जिहाद का समर्थन करते हैं। लेकिन वह अपने बड़ों और दूसरे उलमाओं के सम्मान में खुद चुप हैं। उन मुफ्तियों को अपने बुजुर्गों को सम्मान के साथ इस मसअला का महत्त्व समझाना चाहिए। और बुजुर्ग उलमा को इसके लिए तैयार करना चाहिए, कि उम्मते मुस्लिमा का मार्गदर्शन करें। क्योंकि उम्मत की बहुमत उलमा ही के निर्णय को स्वीकार करती है। लेकिन अगर उनके बुजुर्ग इसके लिए तैयार नहीं हैं, तो खुद से आगे बढ़कर फतावा जारी कर देने चाहिए। अल्लाह के यहां यह बहाना स्वीकार नहीं किया जाएगा, कि हम बुजुर्गों के सम्मान में चुप थे। बल्कि वहां तो आपसे यह सवाल होगा, कि अल्लाह के दीन को जिस समय आपके इल्म की आवश्यकता थी, जो अल्लाह ने आपको दिया था, तो उसे लोगों से क्यों छुपा कर रखा।

21. उलमाओं, और दीनी मार्गदर्शकों को जिहाद की सही खबरें पहुंचाना।

आलिम होने का यह अर्थ बिल्कुल नहीं है, कि उसे दुनिया की हर बात की सही जानकारी मिल चुकी है। जो लोग किसी विशेष इल्म या विभाग के माहिर होते हैं। वह किसी दूसरे इल्म या विभाग से संबंधित बस ऊपरी जानकारियां रखते हैं। उसी प्रकार उलमा ए किराम जो दीन के एक विशेष विभाग से जुड़े हुए हैं, जरूरी नहीं है, कि जिहाद, और मुजाहिदीन से संबंधित उन्हें सही जानकारियां मिल रही हों। यह मेरा व्यक्तिगत अनुभव है। कुछ उलमा जो इस समय मुस्लिम दुनिया के चोटी के उलमा माने जाते हैं, उनसे मिलकर मुझे आश्चर्य का तीव्र झटका लगा, जब पता चला उन्हें मुजाहिदीन के बारे में कुछ भी जानकारी नहीं है। रुचिपूर्ण बात यह है, कि कुफ्फार भली-भांति जानते हैं, कि उलमा का इस उम्मत में क्या महत्त्व है। इसलिए उन्होंने इस्लामी विद्वानों को प्रभावित करने के लिए विशेष ध्यान एवं परिश्रम से काम किया है। काफिरों को उस दृश्य में बड़ा मज़ा आता है, जब वह आलिमों को बहुत कम महत्व वाले फिक्ही मसअलों में लंबी चौड़ी बहस करके, अपनी विचारधारा मजबूत बनाते देखते हैं। इस तरह

मुसलमान उम्मत की नजर को गंभीर और कोमल मसअलों से हटाकर इन छोटे-छोटे वृत्तों में उलझाए रखते हैं। तो आप उलमा को जिहाद के मैदान की ताजा खबरें निरंतर पहुंचाते रहें। इसी से संभव है, कि उनकी नजर में जिहाद का महत्त्व स्पष्ट हो जाए। मेरे भाईयो! मैं उलमा को प्रभावित करने के लिए प्रयास पर इतना बल इसलिए दे रहा हूं, कि मेरी निगाह में एक आलिम को मुजाहिद बनाना, 100 मुजाहिद तैयार करने से बेहतर है। लेकिन आलिमों के बारे में कुछ बातें जेहन में बैठा लें।

१ जब भी आलिमों से बात-चीत का अवसर मिले, हमेशा उनके सामने विद्यार्थी की तरह सवाल करें। और कभी प्रत्यक्ष उनका विरोध न करें।

२ याद रखें बहुत से उलमा बहुत अधिक व्यस्तता का जीवन व्यतीत कर रहे हैं। अतः उनके लिए किताबों का उत्तम चुनाव करें, जो संक्षिप्त और बहुत ही प्रभावशाली सामग्रियों पर आधारित हो।

३ उलमा से बहस-मुबाहसा न करें। इससे उनके दिल में मुजाहिदीन के लिए जन्म लेने वाला सौहार्द और सहयोग झाग की तरह बैठ जाएगी।

४ अगर कोई आलिम कठोर विरोध करें, तो भी प्रयास करें, कि आपकी ओर से बाह्य सम्मान बाकी रहे। अगर आपने भी विरोध के जवाब में कोई कठोर बात कह दी, तो संभव है, कि वह आलिम मुजाहिदीन के पीछे हाथ धोकर पड़ जाए। और फिर हर खुतबा, और पाठ में मुजाहिदीन की आलोचना करना उसकी आदत बन जाए।

22. शारीरिक व्यायाम

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया। बलशाली और मजबूत मोमिन अल्लाह को एक कमज़ोर मोमिन की तुलना में अधिक पसंद है। (मुस्लिम)

शारीरिक व्यायाम जिहाद के प्रशिक्षण का अनिवार्य अंग है। आज की लड़ाइयों में केवल शारीरिक रूप से मजबूत होने ही की आवश्यकता नहीं है। बल्कि ऐसे मुजाहिदीन चाहिए, जो दूर का रास्ता पैदल चलकर पार कर सकते हों। दूर तक दौड़ सकते हों। और हर प्रकार के पहाड़ पर चढ़ सकते हों।(यह देहाती गोरिला लड़ाई के लिए जरूरी है) और बहुत तेज दौड़ सकते हों। (यह शहरी गोरिला लड़ाई के लिए जरूरी है।) शहरी और गैर शहरी गोरिला लड़ाइयों में थोड़ा अंतर होता है। अतः उसकी आवश्यकताओं के अनुरुप मुजाहिदीन को तैयार होना चाहिए। उनके साथ ही वह बोझ उठाने में भी कोई दिक्कत महसूस न करे। बू सेनिया और चेचेनिया के मैदानों में हमारा अनुभव रहा है, कि जो मुजाहिदीन ऐसे शारीरिक प्रशिक्षण नहीं रखते, वह पूरे समूह पर बोझ बन जाते थे। और सबकी गति सुस्त करने का कारण बन जाते थे। और ऐसे मुजाहिदीन का दुश्मनों के हाथ में आने की संभावना भी अधिक रहती है। ऐसे व्यायाम जिससे शरीर को कठोर परिश्रम की आदत पड़े, अर्थात जिससे आदमी में देर तक काम करने की क्षमता उत्पन्न हो। वह आज ताकत, और चुस्ती के व्यायामों से अधिक जरूरी हो गया है। जो मुसलमान लड़ाई में प्रत्यक्ष भाग नहीं लेते, उनके लिए भी शारीरिक व्यायाम हर स्थिति में जरूरी है। उसी प्रकार जेल की दुखों और परेशानियों को एक कठिनाई सहन करने वाला व्यक्ति, अधिक समय तक सहन कर सकता है। शुरुआत में सभी मुसलमान मजबूत और बलशाली शरीर के मालिक होते थे। क्योंकि जिहाद उनके जीवन का अनिवार्य अंग था।

हजरत अम्र बिन आस रजियल्लाहु अन्ह जिन्होंने हजरत उमर रजियल्लाहु अन्ह के ज़माना में मिस्त्र को फतह किया। और वहां के राज्यपाल निर्धारित किए गए। अपने जुमा के खुतबा में कहा करते थे। खबरदार मुझे तुम में कोई ऐसा न मिले, जिसका अपना वजन बढ़ रहा हो। और उसके घोड़े का वजन कम हो रहा हो। अगर मुझे कोई ऐसा नजर आया। तो मैं उसकी तनखाह कम कर दूंगा।

मेरे भाईयो अच्छी नियत के साथ व्यायाम करना एक इबादत है। मेरी बहनें सुनें! वह भी इस हुक्म से अलग नहीं हैं। उनको भी विभिन्न व्यायाम पाबंदियों के साथ करना चाहिए। मैं भाइयों से निवेदन करुंगा, कि बहनों के लिए ऐसे अवसर प्रदान करें, जो शरीयत के अनुसार जायज हो

23. सैन्य प्रशिक्षण (फौजी ट्रेनिंग)

आज जिहाद का प्रशिक्षण भी उसी प्रकार फर्ज है, जैसे जिहाद फर्ज है। इसलिए कि यह शरई नियम है, कि किसी फर्ज के लिए किसी चीज की जरूरत होगी, वह भी फर्ज होगा। और हथियारों का प्रशिक्षण जिहाद की बुनियादी जरूरत है। अल्लाह तआला सूरह अंफाल आयत 60 में फरमाते हैं।

وَأَعِدُّوا۟ لَهُم مَّا ٱسْتَطَعْتُم مِّن قُوَّةٍ وَمِن رِّبَاطِ ٱلْخَيْلِ تُرْهِبُونَ بِهِۦ عَدُوَّ ٱللَّهِ وَعَدُوَّكُمْ وَءَاخَرِينَ مِن دُونِهِمْ لَا تَعْلَمُونَهُمُ ٱللَّهُ يَعْلَمُهُمْ ۚ

अनुवादः- उनके विरुद्ध तैयारी कर रखो, पूरे बल और हथियारों के साथ, और बेहतरीन सवारियों के साथ, जिसके द्वारा तुम अपने और अल्लाह के दुश्मनों को भयभीत कर दो। और उन दुश्मनों को भी जिनको तुम नहीं जानते। अल्लाह जानता है।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस हदीस की व्याख्या करते हुए फ़रमाया। ताकत निशाना में माहिर होना है। ताकत निशाना में माहिर होना है। (मुस्लिम)

आज सैन्य प्रशिक्षण इतना महत्त्वपूर्ण और जरूरी है। अगर आपके देश में हथियार सीखने का प्रबंध संभव नहीं है। तो आपके लिए जरूरी है, कि यात्रा करके दुसरे देश जाएं, जहां आपको यह अवसर मिले।

24. मेडिकल फर्स्ट एड (प्राथमिक चिकित्सा)

अधिकांश समय मुजाहिदीन के लिए अस्पताल जाना संभव नहीं होता, ऐसी स्थिति में प्राथमिक चिकित्सा ही सिर्फ चिकित्सा उपचार है। प्राथमिक चिकित्सा का प्रशिक्षण विभिन्न प्रकार का होता है। इसलिए आप इस ढंग से प्रशिक्षण लें, जिसकी लड़ाई के मैदान में जरूरत हो। वह मुसलमान भाई और बहन जो मेडिकल विभाग से संबंध रखते हैं, और किसी ऐसे डॉक्टर को जानते हों, जिन्होंने घायल सैनिकों या मुजाहिदीन का इलाज किया है, उससे यह प्रशिक्षण लिया जा सकता है।

25. जिहाद से संबंधित फिक्ही मसाइल सीखना।

जिहाद के फिक्ही मसाइल से मुराद ऐसे फतावा हैं, जिनका मुजाहिदीन को सामान्य तौर पर सामना होता रहता है। जैसे जिहाद के विभिन्न अहकाम, दारुल हर्ब के अहकाम, नागरिकों की हलाकत का मसअला, फिदाई हमला, गैर मुस्लिम सरकारों के साथ अनुबंधों की हकीकत, इकदामी और दिफाई जिहाद के शर्तों के बीच अंतर, मुसलमानों के विरुद्ध काफिरों की मदद करना, और वर्तमान तथाकथित मुसलमान सरकारों, शासकों की हकीकत इत्यादि। इसके अलावा जिहाद की फजीलत का अध्ययन भी बहुत ही महत्वपूर्ण है। उसी से जानकारी होती है, कि जिहाद दीने इस्लाम की सर्वोच्च चोटी और सबसे अफज़ल इबादत है। इस संदर्भ की सबसे महत्त्वपूर्ण किताब, इमाम अन-नहहास रहिमहुल्लाह (जिनका निर्धन 818 हिजरी में हुआ) जिनका पूरा नाम अबू जकरिया अहमद बिन इब्राहीम बिन मुहम्मद अद्दमिश्की है, की मशारिउल अशवाक इला मसारिइल मशाक है। शैख अब्दुल्लाह अज़्जाम के नजदीक यह जिहाद की सबसे अच्छी किताब है। इस किताब का अरबी से कई भाषाओं में अनुवाद हो चुका है।

26. मुजाहिदीन की रक्षा करना, और उनको पनाह देना।

अल्लाह का फरमान है।

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَ هاجَرُوا وَ جاهَدُوا بِأَمْوالِهِمْ وَ أَنْفُسِهِمْ فِى سَبِيلِ اللهِ وَ الَّذِينَ آوَوْا وَ نَصَرُوا أُولئِکَ بَعْضُهُمْ أَوْلِياءُ بَعْض....

अनुवाद:- जो लोग ईमान लाए, और हिजरत की(देश छोड़ा), और अपनी जानों और मालों से अल्लाह के रास्ता में जिहाद किया, और वह लोग जिन्होंने उनको पनाह दी, और उनकी मदद की, यही एक दूसरे के सहयोगी हैं।(अंफाल 72)

और यह भी फरमाया

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَهَاجَرُوا وَجَاهَدُوا فِي سَبِيلِ اللهِ وَالَّذِينَ آوَوا وَّنَصَرُوا أُولَٰئِكَ هُمُ الْمُؤْمِنُونَ حَقًّا ۚ لَّهُم مَّغْفِرَةٌ وَرِزْقٌ كَرِيمٌ

अनुवाद:- जो लोग ईमान लाए, हिजरत की, और अल्लाह के रास्ता में जान और माल से जिहाद किया, और जिन्होंने उनको पनाह दी, और सहायता प्रदान की, यही लोग वास्तव में ईमान वाले हैं। और उनके लिए क्षमा और उत्तम रोजी है। (अंफाल 74)

जब मुजाहिदीन संकट में घिरे हुए हों, तो उनकी रक्षा, और ठिकाना का प्रबंध करना हमारा दायित्व बन जाता है। यह स्वीकार है, कि मुजाहिदीन को पनाह देना, ठिकाना प्रदान करना, महंगा साबित हो सकता है, लेकिन अल्लाह का दीन हमसे ऐसी कुर्बानियों का सवाल करता है। दीन के लिए कुर्बानी दिए बगैर, न तो अल्लाह को प्रसन्न किया जा सकता है, और न ही ईमान की पुष्टि संभव है। तालिबान हफिजहुमुल्लाह का उदाहरण हमारे सामने है। वैश्विक काफिर शक्तियों के हर प्रकार की धमकियों के बा वजूद अरब मुजाहिदीन को पनाह दिया उन्हें ठिकाना दिया। अमेरिका और उसके सहयोगियों को दो टोक उत्तर दिया, कि अपने मेहमानों को इस्लाम के दुश्मनों को सौंप देना

हमारी इस्लामी गैरत और अभिमान के विरुद्ध है। तालिबान हफिजहुमुल्लाह ने अरब मेहमानों की मेहमान नवाजी की जो भारी कीमत चुकाई, उसे उनकी हार नहीं समझनी चाहिए। वास्तव में यह उनकी जीत है। उन्होंने अल्लाह की नज़र में सफलता प्राप्त की है। उसके बाद इस बात का कोई महत्त्व नहीं रहता है, कि उन्हें कितना नुकसान सहन करना पड़ा। मनुष्य की जानों और मालों की क्षति भी बड़ा नुकसान है, लेकिन इस्लामी हुकूमत के छीन जाने से बड़ा नुकसान क्या हो सकता है? मुझे विश्वास है, जो कुछ संसार में उनसे छिना गया है, उनका उत्तम बदला अल्लाह संसार में भी उन्हें प्रदान करेंगे। इन शा अल्लाह

दीन बेचकर दुनिया में जो कुछ भी मिले, वह घाटा है। और दीन पर स्थिरता दिखाकर जो कुछ भी छिन जाए, वह लाभ है। वादा करें, कि हम अपने घर के दरवाजे मुजाहिदीन के लिए सदैव खुला छोड़ेंगे। और जिन चीजों की उन्हें आवश्यकता हो, वह उन्हें प्रदान करेंगे। क्या आप भूल गए, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मदीना के अंसार से आखिर इतना प्यार क्यों था?

27. अल वला वल बरा(दोस्ती और दुश्मनी) के अकीदे का प्रचार करना

अफसोस कि इस्लामी दुनिया में अल्लाह तआला, अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम , और ईमान वालों के साथ दोस्ती, और काफिरों से दुश्मनी के मसअला को साधिकार महत्त्व नहीं दिया गया। लड़ाइयों में मुसलमानों के खिलाफ काफिरों की सहायता करने को हल्का पाप समझा जाता है। हालांकि यह दीने इस्लाम से निकल जाने, और कुफ्र के सिवा कुछ नहीं है। इससे इंसान इस्लाम के दायरा से निकल जाता है, और कुफ्र में दाखिल हो जाता है।

يَآ اَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوا الْيَهُوْدَ وَالنَّصٰرٰٓى اَوْلِيَآءَ ۘ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ۚ وَمَنْ يَّتَوَلَّهُمْ مِّنْكُمْ فَاِنَّهٗ مِنْهُمْ ۗ

अनुवाद:- ऐ ईमान वालो यहूदियों और ईसाइयों को अपना दोस्त मत बनाओ, यह आपस में एक दूसरे के दोस्त हैं, अगर तुम में से कोई उन्हें अपना दोस्त बनाएगा तो उसकी भी उन्हीं में गिनती होगी।(अल-माइदा 51)

दोस्ती तो दूर की बात है। अल्लाह ने इस बात को भी बहुत ना पसंद किया है, कि ईमान वालों के दिल में काफिरों के प्रति हल्का सा भी प्रेम, और सौहार्द हो। अल्लाह तआला फरमाते हैं।

قَدْ كَانَتْ لَكُمْ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ فِي إِبْرَاهِيمَ وَالَّذِينَ مَعَهُ إِذْ قَالُوا لِقَوْمِهِمْ إِنَّا بُرَآءُ مِنكُمْ وَمِمَّا تَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ كَفَرْنَا بِكُمْ وَبَدَا بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمُ الْعَدَاوَةُ وَالْبَغْضَاءُ أَبَدًا حَتَّىٰ تُؤْمِنُوا بِاللَّهِ وَحْدَهُ

अनुवाद: निसंदेह इब्राहीम अलैहिस्सलाम और उनके साथियों में तुम्हारे लिए उत्तम नमूना है। जब उन्होंने अपनी कौम से स्पष्ट कह दिया। हम तुमसे और तुम्हारे उन माबूदों से जिन्हें तुम अल्लाह को छोड़कर पूजते हो, विमुख हैं। हमने तुमसे कुफ्र किया। हमारे और तुम्हारे बीच दुश्मनी और घृणा हमेशा रहेगी, जब तक कि तुम एक अल्लाह पर ईमान न ले आओ। (मुमतहिना 4)

एवं अल्लाह कुरआन में मुजाहिदीन की यह विशेषता बताते हैं।

اَذِلَّةٍ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ اَعِزَّةٍ عَلَى الْكَافِرِيْنَ ؗ

मोमिनों के लिए नर्म और काफिरों के लिए कठोर हैं।(माइदा 54)

चुनांचे पूरी मुस्लिम उम्मत के भीतर यह जागरूकता पैदा करना, और सामान्य मुसलमानों के जहनों को साफ करना बहुत जरूरी है, कि केवल अल्लाह उसके रसूल और ईमान वालों से दोस्ती और काफिरों से दुश्मनी का क्या अर्थ है। इमाम इब्ने तैमिया रहिमहुल्लाह कहते हैं। "यदि कोई मोमिन तुम्हारे विरुद्ध बात करे, फिर भी मुसलमान होने के नाते तुम्हारे लिए जरूरी है कि तुम उनका समर्थन करो। और तुम पर जरूरी है कि काफिरों से घृणा करो चाहे वे तुम्हारे ऊपर कितना ही अधिक एहसान करें।" काफिरों से घृणा करना लड़ाइयों में मुसलमानों की एक जरूरत है। याद रखिए! जब तक मुसलमानों के दिल में काफिरों के प्रति जरा भी सौहार्द होगा अल्लाह मुसलमानों को विजय प्रदान नहीं करेंगे।क्योंकि इस बात को अल्लाह ने बहुत ना पसंद किया है, कि मुसलमानों के दिलों में उनके लिए अच्छी भावनाएं हों। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सहाबा किराम रजियल्लाहु अन्हुम अजमईन को भी अल्लाह ने उस समय तक विजय प्रदान नहीं किया, जब तक उनके प्रेम और घृणा के पैमाने इस आधार पर स्थापित नहीं हुए।

28. लड़ाइयों में गिरफ्तार होने वाले मुसलमानों के संबंध में फर्ज की अदाएगी।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कैदियों को रिहा करवाओ।(बुखारी)

इस्लामी उलमा इस बात पर सहमत हैं, कि मुसलमान कैदियों को आजाद कराना सभी मुसलमानों पर फर्ज है। कुछ के नजदीक अगर एक मुसलमान को आजाद करवाने के लिए सभी मुसलमानों को अपना सभी धन खर्च करना पड़ जाए, तो यह भी फर्ज होगा। आज कितने ही मुवहहिद मुसलमान और अल्लाह के रास्ते के मुजाहिद, काफिरों के जेलों में कैद हैं। विश्व का कौनसा क्षेत्र ऐसा है, जिसके जेल मुजाहिदीन से भरे हुए न हों। लेकिन अफसोस है, कि अपने हों, या पराए सब उन्हें भुला बैठे हैं।

यह आश्चर्यजनक ईमान है, जो मुसलमान बहनों को काफिरों के कैद में देखकर भी जोश नहीं मारता। हमें उम्मते मुस्लिमा के भीतर इस मसअला के महत्त्व को स्पष्ट करना है, कि उनकी रिहाई के लिए अपने साधनों को खर्च करना मुसलमानों पर फर्ज है। मस्जिदों के इमाम उलमा और मुदर्रिसीन (शिक्षक गण) उन कैदियों की रिहाई के लिए जरूर दुआएं करें। ताकि उम्मते मुस्लिमा के भीतर इस मसअला का महत्त्व स्पष्ट हो सके। दूसरी ओर जिहादी संगठनों को भी अपने कुछ मुजाहिदीन को इस दिशा में लगाने की आवश्यकता है।

30. इंटरनेट की लड़ाई लड़ना

मीडिया और प्रकाशन संस्थाओं के सभी दरवाजे मुजाहिदीन पर बंद हैं। ऐसी स्थिति में इंटरनेट जिहाद की आवाज और मुजाहिदीन के समाचार पहुंचाने का एक मात्र संसाधन बन चुका है। जो मुसलमान भाई और बहन इस विभाग से संबंध रखते हैं, वह आगे बढ़ें। और इस काम को संभालें। और अपने ऊपर आई हुई जिम्मेवारी निभाएं। उसकी कुछ संभावित शक्लें यह हैं।

*डिस्कसन फोरम्स

ऐसे फोरम बनाए जाएं, जहां जिहादी बात चीत करने और जिहादी सामग्रियों तक पहचने की निशुल्क और पूर्ण आजादी हो।

* ईमेल लिस्ट बनाना और ईमेलिंग करना,

ईमेल लिस्ट द्वारा लोगों तक जिहादी जानकारियां पहुंचाई जाती हों

*अपलोड करना

इंटरनेट पर जिहादी लिटरेचर और ऑडियो इत्यादि अपलोड करना ताकि यह दुनिया में हर जगह उपलब्ध हो।

*वेबसाइट बनाना

जिहादी वेबसाइट बनाना, और अगर विवरण सहित वेबसाइट संभव न हो, तो किसी विशेष दिशा में जैसे वेबसाइट जो केवल मुजाहिदीन के समाचार उपलब्ध कराती हों, इत्यादि बनाना।

30.बच्चों में जिहाद और मुजाहिदीन की मुहब्बत डालना।

बच्चों को शुरू ही से ऐसे वातावरण में परवान चढ़ाएं, जिससे उनके भीतर जिहाद की मुहब्बत पैदा हो जाए। इस्लामी इतिहास और सहाबा किराम रजियल्लाहु अन्हुम अजमईन के वाकियात उन्हें बचपन ही से सुनाने शुरू कर दें। बचपन ही में हमारे बच्चे अली बिन अबी तालिब रजियल्लाहु अन्ह, खालिद बिन वलीद रजियल्लाहु अन्ह, अबू उबैदा बिन अल-जर्राह रजियल्लाहु अन्ह, सअद बिन अबी वकास रजियल्लाहु अन्ह, मुसन्ना बिन हारसा रजियल्लाहु अन्ह, मुहम्मद अल-फातिह रहिमहुल्लाह, मुहम्मद बिन कासिम रहिमहुल्लाह, सलाहुद्दीन ऐयूबी रहिमहुल्लाह के नामों और अद्भुत कार्यों से भली-भांति परिचित हों, बच्चों के आईडियल और रोल मॉडल खिलाड़ियों और फिल्मी एक्टरों के बजाए, अब्दुल्लाह अज़्जाम रहिमहुल्लाह, शैख उसामा रहिमहुल्लाह, हजरत अमीरुल मोमिनीन मुल्ला मुहम्मद उमर रहिमहुल्लाह, हकीमुल्लाह महसूद रहिमहुल्लाह, अबू मुसअब जरकावी रहिमहुल्लाह, अब्दुर रशीद गाज़ी रहिमहुल्लाह, अब्दुल्लाह महसूद रहिमहुल्लाह, नेक मुहम्मद रहिमहुल्लाह, बैतुल्लाह महसूद रहिमहुल्लाह जैसे जिहादी और शहीद मार्गदर्शकों को बनाइए। दूसरी ओर वह फिरऔन, नमरूद, कारून, और अबू जहल जैसे इतिहास के जाहिलों से भी परिचित हों। ताकि बचपना ही में उन्हें समय के उन पापियों और भ्रष्ट लोगों को पहचानने में

परेशानी न हो। उन्हें मम्मी, डैडी जैसे बच्चों की तरह यह सिखाने के बजाए कि, "खबरदार शरीफ बच्चे बन कर रहो, और किसी मुश्किल में न फंसो" यह सिखाना चाहिए, कि हमेशा हक़ बात बोलो, और हक़ पर रहो, चाहे उसके कारण किसी मुश्किल का सामना करना पड़े। उन्हें मुश्किल काम से जान बचाकर भागने वाला नहीं, बल्कि हक के लिए मुश्किलात का सामना करने वाला, मुश्किलात सहन करने वाला बनाइए। हजरत जुबैर बिन औवाम रजियल्लाहु अन्ह अशरए मुबशशरा में से एक हैं। अपने बेटे अब्दुल्लाह रजियल्लाहु अन्ह को अपने साथ लड़ाइयों में लेकर जाते थे। लेकिन वह इतने छोटे थे, कि लड़ाई में भाग नहीं ले सकते थे, चुनांचे उनके हाथ में छोटा सा खंजर दे देते, और कहते जाते, "जहां भी कोई काफिर घायल पड़ा हुआ मिले, उसकी गर्दन काट लेना।" बचपन के इसी प्रशिक्षण का परिणाम है, कि अब्दुल्लाह बिन जुबैर रजियल्लाहु अन्ह को उम्मत के बहादुर लोगों की पंक्तियों में याद किया जाता है।

ऐसा प्रशिक्षण केवल बच्चों के लिए नहीं है। बल्कि यही प्रशिक्षण अपनी बच्चियों को भी देना है। अगरचे लड़ाई में प्रत्यक्ष रूप में केवल पुरुष भाग लेते हैं। लेकिन हमारी बहनों को भी एक मुजाहिद की तरह होना चाहिए। क्योंकि आगे चलकर उन्हें अपने मुजाहिद पति, भाइयों और बेटों के साथ जीवन यापन करना है। इसलिए उनके भीतर भी जिहाद के लिए सब्र, और मुश्किलात सहन करने की आदत होनी चाहिए। अर्थात जब उनके पति लड़ाइयों के लिए जाएं, तो यह उन्हें रोकने के बजाए, खुशी के साथ विदा करें। और अगर वह कैद में हों, तो सब्र कर सकें। और अगर शहीद हो जाएं, तो उसे खुश नसीबी समझें।

31. सुख की चाह, आलस और आरामदायक जीवन छोड़ना

शैख अब्दुल्लाह अज़्जाम रहिमहुल्लाह कहते हैं, सुख की चाह जिहाद की दुश्मन है," जिहाद एक मुश्किल इबादत है। कुर्बानी की कोई शक्ल ऐसी नहीं है, जो इसमें न देनी पड़ती हो। सुखों, सुविधाओं और आरामदायक जीवन को अभी से छोड़ने का प्रयास शुरु कर दें। इससे जिहाद की बहुत सी रुकावटें दूर हो जाती हैं। उदाहरण के तौर पर हर मुसलमान के भीतर ऐसी आदत होनी चाहिए, कि सुखद, आरामदायक बिस्तर छोड़कर किसी भी असुखद जगह सो सकता हो। कैसा भी स्वाद वाला खाना खा सके, हर खाने को नेमत समझे। जाड़े में ठंडा पानी से वजू और गुस्ल(स्नान) कर सकता हो। और कई-कई दिन नहाए बगैर रहने में परेशानी महसूस न करे, चाहे शरीर धूल और मिट्टी से अटा हुआ हो। जिसे भी मुजाहिद बनने की इच्छा हो उसे अपनी निजी इच्छाओं, चाहतों पर पूरा नियंत्रण हो। उसके अलावा अधिक सोने और अधिक खाने की आदत छोड़नी होगी। इसके लिए उत्तम अमल तहज्जुद और सोमवार एवं गुरुवार के नफल रोजे हैं।

32. ऐसे हुनरों में निपुणता प्राप्त करना, माहिर बनना जिसकी जिहाद को जरूरत है।

बहुत से मुसलमान यह दावा करते हैं, कि हम तकनीकी विभागों में महारत ,(निपुणता) प्राप्त करना चाहते हैं। और अमुक शैक्षणिक प्रमाणपत्र इसलिए लेना चाहते हैं, ताकि इस्लाम की सेवा कर सकें। लेकिन अधिकतर मुसलमानों की स्थिति यह है, कि योग्यता की प्राप्ति के बाद उनका लक्ष्य केवल अपनी जेबें भरना और इच्छाओं का पेट पालना होता है। जिहाद का मैदान बहुत व्यापक है, उसमें विभिन्न प्रकार की महारतें चाहिए। भाइयों और बहनों को उन फुनून में महारतें प्राप्त करनी चाहिए, ताकि इस्लाम की सेवा कर सकें। मैं आपको सचेत करना चाहत हूं, कि जो कुछ भी सीखें, केवल इसलिए कि आप इस्लाम की सेवा कर सकें। और आज मुजाहिदीन को तकनीकी विभागों में माहिर लोग भी चाहिए। ऐसे लोग अपनी सेवा के द्वारा जिहाद में ज़रूर भाग लें। जैसे

*केमिकल

*इलेक्ट्रिक या इलेक्ट्रॉनिक

* टेली कम्यूनिकेशंज

*इंटरनेट मल्टीमीडिया इत्यादि

मैं हर मुसलमान को सलाह दूंगा। और उनके लिए बेहतर भी यही होगा, कि वह मुजाहिदीन के अमीर या कमांडर के सलाह से इल्मी और तकनीकी विभागों में कदम बढ़ाएं।

33.जिहादी इज्तेमाईयत(समस्तीवाद) अपनाना

इस्लाम की अधिकांश इबादतों की तरह हर काम में इज्तेमाइयत की जरूरत होती है। दावत इलल्लाह, अम्र बिल मारुफ, नह्य अनिल मुनकर, इकामते दीन और जिहाद फी सबीलिल्लाह कोई ऐसा काम नहीं है, जिसमें समस्तीवाद आवश्यक न हो। आज प्रत्येक मुस्लिम-समाज में बहुत सी जमाअतें और गिरोह विभिन्न विभागों में इस्लाम की सेवा कर रहे हैं। अधिकतर मुसलमान यह सवाल करते हैं, कि उनमें से किस समूह से जुड़ें। इसमें कोई संदेह नहीं है, कि इस समय ईमान लाने के बाद सबसे महत्त्वपूर्ण फर्ज जिहाद फी सबीलिल्लाह है। और आज उम्मत को जिहाद ही की सबसे अधिक आवश्यकता है। जबकि इसके महत्त्व बढ़ जाने और फर्ज़-ए-ऐन होने के बावजूद उम्मत की स्थिति यह है, कि सबसे अधिक ला परवाही इसी बड़ी इबादत के साथ बरती जा रही है। अगर आप अल्लाह के करीबी बंदों में शामिल होना चाहते हैं, तो मैं आपको सलाह दूंगा, कि ऐसे समूह को अपनाएं, जिसका मूल लक्ष्य जिहाद फी सबीलिल्लाह हो। हर उस जमाअत से बचें, जो जिहाद से दूर रहे। अगर सहाबा किराम रजियल्लाहु अन्हुम अजमईन के जीवन का अध्ययन करेंगे, तो पता चलेगा , रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़माने में भी और आपके निधन के बाद भी उस जमात का प्रतीक और मूल लक्ष्य जिहाद फी

सबीलिल्लाह रहा है। क्या आपने सोचा है आज अगर कोई सहाबी इस दुनिया में होता तो क्या कर रहा होता?? और क्या आप जानते हैं, हजरत ईसा बिन मरियम अलैहिस्सलाम को किस समूह के साथ शामिल होना है??

34.संस्कारिक और अध्यात्मिक प्रशिक्षण

आज तक मुसलमानों को काफिरों से लड़ाई करने में कभी भी इस कारण से हार का सामना नहीं करना पड़ा, कि कुफ्फार भौतिक संसाधनों के अनुसार मुसलमानों से अधिक बलशाली थे। इस्लामी इतिहास इस पर गवाह है, की सभी बड़ी लड़ाइयां जिसमें मुसलमान विजेता बने, उनमें से शायद किसी एक में भी मुसलमान संसाधनों के अनुसार काफिर से अधिक शक्तिशाली नहीं थे। जब भी मुसलमानों को हार का सामना करना पड़ा, उसका मूल कारण ईमानी कमजोरी रहा।

وَمَا أَصَابَكُم مِّن مُّصِيبَةٍ فَبِمَا كَسَبَتْ أَيْدِيكُمْ وَيَعْفُو عَن كَثِيرٍ

अनुवादः- तुम पर जो भी मुसीबत आती है वह तुम्हारे हाथों की कमाई हुई होती है। अन्यथा बहुत सी गलतियों को अल्लाह ऐसे भी अनदेखा कर देते हैं।(शूरा 30)

मुश्किल इबादत के लिए अध्यात्मिक प्रशिक्षण की आवश्यकता है। जैसे जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को नुबुवत का मुश्किल काम दिया गया, तो कहा गया।

يَا أَيُّهَا الْمُزَّمِّلُ
قُمِ اللَّيْلَ إِلاَّ قَلِيلا
نِصْفَهُ أَوِ انقُصْ مِنْهُ قَلِيلا
أَوْ زِدْ عَلَيْهِ وَرَتِّلِ الْقُرْآنَ تَرْتِيلا
إِنَّا سَنُلْقِي عَلَيْكَ قَوْلا ثَقِيلا

ऐ कंबल में लिपटकर सोने वाले, उठिए रात में कुछ देर कयाम करें, आधा भाग, या उससे कुछ कम, या कुछ अधिक समय, और ठहर-ठहर कर कुरआन की तिलावत कीजिए। निश्चित रूप से हम आप पर एक भारी जिम्मेवारी डाल रहे हैं।

जिहाद एक बहुत कठिन इबादत है, इसलिए उसमें अध्यात्मिक प्रशिक्षण की आवश्यकता सबसे अधिक होती है। तहज्जुद, और नफ्ल रोजों की पाबंदी और अधिक से अधिक कुरआन की तिलावत और सुबह, शाम के अज़कार और दुआएं मुजाहिदीन की विशिष्ट मदद करते हैं।

35.उलमा ए हक़ को ढूंढना

सबसे पहले तो मैं आपको यह विश्वास दिलाना चाहता हूं, कि दुर्भाग्यवश आज बहुत से उलमा भी इस्लाम-दुश्मन शक्तियों के विशिष्ट सहायक बन गए हैं। इस्लाम के दुश्मनों ने मीडिया और मुर्तद्द सरकारों को प्रयोग करते करते अधिकतम उलमा से हक छीन लिया है। और जो उलमा मुजाहिदीन के विरुद्ध हैं। और मुर्तद्द हुकूमतों का समर्थन करते हैं। उनको एक ओर तो सरकार की ओर से अनुदान, अपहार इत्यादि देने का श्रृंखला चालू है। और दूसरी ओर मीडिया भी ऐसे आलिमों की बातें खूब फैलाता है। जब उलमा मीडिया में आते हैं, तो इससे वह खूब प्रसिद्ध हो जाते हैं। और किसी आलिम के लिए हुक्मरानों की ओर से अनुदान और प्रसिद्दि उसके इल्म की बरबादी के अलावा कुछ नहीं है। जबकि दूसरी ओर उलमा ए हक़ को भयभीत किया जाता है। और उन्हें हक बोलने के कारण हथकड़ियों में जकड़ दिया जाता है। यहां तक कि बहुत से उलमा को शहीद भी किया जाता रहा है। ऐसे उलमा को मीडिया जान बूझकर अनदेखा करता है, ताकि कोई उनसे और उनके विचारों से परिचित न होने पाए।

मैं यह स्पष्ट करता चलूं, कि वास्तव में बड़ा आलिम होने की कसौटी यह कतई नहीं है, कि कौन कितना प्रसिद्ध है। मेरे नजदीक आलिम वास्तव में वह है, जो हक बात करे। और हक के लिए दूसरों को आमंत्रित करे। चाहे वह कितना ही अप्रसिद्ध हो। इसलिए ऐसे उलमा जो अधिक प्रसिद्ध नहीं हैं। मुजाहिदीन और जिहाद का समर्थन करते हैं। और उलमा ए हक़ के समूह में शामिल होते हैं। उनको प्रसिद्ध करना बहुत जरूरी है। ताकि मुजाहिदीन और सामान्य लोग उनसे और उनके विचारों से परिचित हो सकें।

36.हिजरत की तैयारी करना।

जो लोग काफिर हुकूमतों के अंतर्गत रहते हैं, उनके दिलों में अंजाने में काफिरों के प्रति सहानुभूति उत्पन्न हो ही जाती है। जब मदीना में इस्लामी हुकूमत स्थापित थी। तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने काफिरों के बीच रहने पर प्रतिबंध लगा दिया था। आज इस्लाम और कुफ्र की वैश्विक लड़ाई चालू है, इसलिए विश्व भर के मुसलमानों से कहूंगा आप काफिरों के बीच से निकलने की तैयारी करें। हिजरत केवल गैर मुस्लिम देशों में रहने वाले मुसलमानों ही के लिए जरूरी नहीं है, बल्कि जिहाद के फर्ज हो जाने के कारण मुस्लिम देशों में रहने वाले मुसलमानों पर भी जरूरी है। क्योंकि जिहाद के लिए हिजरत की आवश्यकता होती है। अतः इस हिजरत के लिए प्रत्येक मुसलमान को बिल्कुल तैयार रहना चाहिए। चाहे स्थाई हिजरत हो चाहे अस्थाई। मुसनद अहमद की हदीस है। हिजरत उस समय तक जारी रहेगी, जब तक जिहाद बाकी रहेगा।

37.मुजाहिदीन की शुभचिंता मुजाहिदीन को नसीसत करना

मुजाहिदीन से भी गलतियां और कोताहियां हो सकती हैं, और बहुत से मामलों में उन्हें लाभदायक मशवरों की आवश्यकता होती है। अतः उनको नसीहत करना भी ठीक है। और मुजाहिदीन के लिए भी जरूरी है, कि उन मशवरों पर दिल से ध्यान दें। इस मामले में मेरे कुछ निवेदन हैं।

यह नसीहत केवल अल्लाह की प्रसन्नता के लिए होनी चाहिए, कुछ भाई मुजाहिदीन को जिस ढंग से नसीहत करते हैं, उससे पता चलता है, कि अल्लाह को प्रसन्न करना उनका उद्देश्य नहीं है।

नसीहत में मुजाहिदीन की कारवाइयों पर आलोचना और आपत्ति का ढंग अपनाने के बजाए मशवरा देने का ढंग अपनाना चाहिए। जैसे कि उन्हें आगे पेश आने वाले संकटों से सचेत करना, और उन्हें लाभदायक जानकारियां प्रदान करना।

मुजाहिदीन की गलतियों को चिन्हित करना जरूरी हो तो उसे जिम्मेदार मुजाहिदीन तक पहुंचाएं। और उसको कतई सार्वजनिक न करें। क्योंकि उससे इस्लाम के दुश्मनों को लाभ पहुंचता है। मुझे पता चला बहुत से ऐसे मुसलमान भी मुजाहिदीन पर आपत्ति जताते हैं, जिन्होंने न तो खुद कभी जिहाद में भाग लिया, और न ही उसको जरूरी समझा। ऐसे लोगों का उदाहरण उन बे नमाजियों जैसा है, जो नमाज पढ़ने वालों की नमाज़ पर आपत्ति जताते हैं। हम अल्लाह से ऐसे मुसलमानों के लिए हिदायत और माफी की दुआ करते हैं।

38.फितनों से संबंधित हदीसों का अध्ययन करना

फितना का अर्थ है परीक्षा, जांच-परख अतः किताबुल फितन में हमें वह हदीसें मिलती हैं, जो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस उम्मत को भविष्य के संकटों(अर्थात रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इस दुनिया से चले जाने के बाद की परिस्थितियों) से सूचित करने के लिए इरशाद फरमाईं। किताबुल फितन की हदीसों का अध्ययन इन कारणों से जरूरी है।

* इस विषय में हदीसों की एक बहुत बड़ी संख्या आई हैं। जिससे इसके महत्त्व का पता चलता है।

* नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लगभग सभी खुतबे छोटे और सारगर्भित होते थे। लेकिन एक बार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फज्र से ईशा तक एक बड़ा खुतबा दिया। और बीच में केवल नमाजों के एहतेमाम का अंतराल हुआ। क्या आप जानते हैं, कि यह पूर्ण खुतबा सिर्फ फितनों से संबंधित मार्गदर्शनों पर आधारित था। इस खुतबा में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने बाद से कयामत तक के सभी फितनों का चर्चा एक साथ कर दिया था। इससे भी इस विषय के महत्त्व का अनुमान लगाया जा सकता है। क्योंकि यह खुतबा आपके जीवन का शायद सबसे लंबा खुतबा था।

* सहाबा किरामरजियल्लाहु अन्हुम अजमईन भी इसका महत्त्व भली-भांति जानते थे। इसीलिए वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से अधिकतर उन फितनों के बारे में पूछ लिया करते थे। ताकि उनसे सुरक्षित रहने का उपाय कर लें।

मुजाहिदीन के लिए ऐसी हदीसों का अध्ययन करने और उन्हें सीखने में बहुत से लाभ हैं।

* इस अध्ययन का सबसे बड़ा लाभ यह है, कि मुसलमान जान लेंगे, कि फितने की घड़ी में सफलता कैसे संभव है।

* इनसे मुजाहिदीन को यह पता चलेगा, कि अभी उम्मते मुस्लिमा को लड़ाई के किन किन चरणों से गुजरना है, और विजय प्राप्त करना है।

* जिहाद ने हमेशा मुस्लिम उम्मत के इतिहास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। लेकिन विगत कई शताब्दियों से जिहाद से विमुखता ने उम्मत के भीतर जिहाद के महत्त्व को खो दिया था। अब उन फितनों की हदीसों से उनका सही मकाम मालूम हो सकेगा। क्योंकि वह बड़े लोग जिन्हें लड़ाइयों के ज़माना में इस उम्मत का नेतृत्व करना है। वह जिहादी सेना में जाकर शामिल होंगे। जैसे इमाम महदी, और ईसा बिन मरियम अलैहिस्सलाम।

* इन्हीं हदीसों से पता चलता है, कि उम्मत को प्रतिष्ठा और सर्वोच्चता न तो इलेक्शन से मिलेगी, और न ही केवल दावत इलल्लाह के फल स्वरुप। बल्कि यह विजय जिहाद फी सबीलिल्लाह की बरकत से प्राप्त होगा।

अंतिम ज़माने में जिहाद में भाग लेने और उन लड़ाइयों में शहीद होने वालों के लिए विजय के साथ-साथ बड़े दरजात की भी खुशखबरियां मौजूद हैं। जिससे मुजाहिदीन को स्थिरता और साहस मिलेगा। और वह खुशी के साथ उन लड़ाइयों में भाग लेंगे। बल्कि मूलतः यही कारण है, कि मैं उन हदीसों का अध्ययन करने और उन्हें सीखने की ओर ध्यान दिला रहा हूं। ताकि सभी मुसलमानों में मुजाहिदीन की पंक्तियों में शामिल होने की तीव्र इच्छा और भावना पैदा हो। और विजय(फतह) और अजर की पेशिंगोई सुनकर उनको जिहाद फी सबीलिल्लाह का साहस मिले।

39.फिरऔन और उसके जादूगरों की भूमिका स्पष्ट करना।

सभी मुस्लिम देशों में उनकी सरकारों ने फिरऔन की भूमिका निभाने की ठान ली है। उसी प्रकार सभी सरकारी मंत्रियों और दरबारी आलिमों, करपट राजनीतिज्ञ उनके जादूगरों की भूमिका निभा रहे हैं। ताकि जनता को धोखा में रखा जाए। जबकि फौज पुलिस और एजेंसियां फिरऔन की वह सेना हैं, जिसने उन्हें ताकत के घमंड में मगन कर दिया है। यह मुर्तद्द हुकूमतें मुजाहिदीन और सलीबी सहयूनी संधि के बीच होने वाली लड़ाई के त्रिकोण में तीसरी दीवार हैं। इसके काफिर और मुर्तद्द होने को स्पष्ट करना इसलिए जरुरी है, कि यह उम्मत को और अधिक धोखा न दे सकें।

आज दुनिया में इस्लाम और कुफ्र के बीच लकीरें खींची जा चुकी हैं। और समय गुजरने के साथ-साथ यह और अधिक स्पष्ट होते जा रहे हैं। जिन लोगों की ईमानी बसीरत सुरक्षित है। मात्र वही जान सकते हैं, कौन किसके साथ खड़ा है।

40.अनाशीद अर्थात तराने

मुसलमानों के भीतर जिहाद की भावना उभारने और उसे तेज करने के लिए तरानों नज्मों कविताओं की आवश्यकता है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के युग में हर वह मुसलमान जो शायरी कर सकता था विशेषकर लड़ाई की स्थिति में मुसलमानों की भावना उत्तेजित करने के लिए और काफिरों को हतोत्साहित करने के लिए अपने अशआर पेश करता और यही काम आज नज्मों, तरानों द्वारा किया जा सकता है। मैं सभी क्षमतावान लोगों से निवेदन करूंगा कि हर प्रकार के जिहादी विषय पर शायरी करें जिन विशेष विषयों पर शायरी की आवश्यकता है वह यह हैं। शहादत के मर्तबा पर, शहीद की याद में, जिहाद ही जन्नत और उम्मत की सरबुलंदी का मात्र रास्ता है, जन्नत के हालात पर, उम्मत की दर्द भरी परिस्थितियों पर, मुजाहिद और मुजाहिद नेताओं मार्गदर्शकों की प्रशंसा में, कैदियों को याद रखने के लिए, हथियार की मुहब्बत पर, और उसी प्रकार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और सहाबा किराम रजियल्लाहु अन्हुम अजमईन की लड़ाइयों के अद्भुत कार्यों पर भी शायरी लाभदायक होगा। लेकिन केवल अच्छी शायरी को तराना की स्थिति में पेश किया जाए और अच्छे तरानों पर वीडियो भी बनाएं फिर उन को बड़ी संख्या में बांटें। कभी कभी पाठ सुनने और किताब पढ़ने की अधिक फुर्सत नहीं होती, लेकिन उस समय तराने सुने जा सकते हैं। जैसे कि गाड़ी चलाते समय या ऐसे काम के बीच जेहन का प्रयोग कम होता है तराने जिहादी संस्कृति उत्पन्न करने का उत्तम साधन है। मुझे पता चला है कि अरबी में तो असंख्य बेहतरीन तराने मौजूद हैं लेकिन दूसरी भाषाओं में तराने इतनी बड़ी संख्या में मौजूद नहीं हैं। मैं समझता हूं कि अरबी के बेहतरीन तरानों का दूसरी भाषाओं में अनुवाद करने की आवश्यकता अभी बाकी है। उसका एक रूप यह है कि अरबी तरानों को वीडियो और अनुवाद के साथ तैयार किया जाए मुझे विश्वास है कि इस प्रकार के तरानों का प्रभाव कई गुना अधिक बढ़ जाएगा।

41.इस्लाम दुश्मन शक्तियों की आर्थिक स्थिति कमज़ोर करना।

जब हजरत सुमामा बिन असाल रजियल्लाहु अन्ह मुसलमान हुए तो उन्होंने ऐलान कर दिया कि कुरैश का व्यापारिक काफला जो उनकी धरती से गुजरता था अब उसे वहां से गुजरने नहीं दिया जाएगा। यह उनकी ईमानी गैरत थी, जो देख रही थी कि कुरैश मुसलमानों से लड़ाइयों में सक्रीय हैं इसलिए उन्हें क्षति पहुंचाने का जो भी उपाय अपनाया जा सकता हो वह अपना लेना चाहिए। काफिरों को आर्थिक क्षति पहुंचाने के बहुत से उपाय संभव

हैं। जैसे उनकी उत्पादों का बहिष्कार करना लेकिन मैं समझता हूं, कि मुजाहिदीन को काफिरों की अर्थ व्यवस्था बरबाद करने के नए नए उपाय निकालने होंगे। कुफ्फार की केवल लड़ाई की सहायक सामग्रियों ही को नहीं काटना है बल्कि ऊपर दिए गए वाकिया से साबित है अगर दुश्मन से लड़ाई हो तो उसके गेहूं तक को खाने की बहुत ही बुनियादी चीजों को भी रोकना जायज है। असल उद्देश्य यह है कि उसे उसकी आर्थिक स्थिति को कठोर धचका लगे जो मुसलमान ऐसे उपाय जानते हों उन्हें चाहिए कि मुजाहिदीन को मशवरे दें।

42. अरबी भाषा सीखना

अरबी जिहाद की अंतरराष्ट्रीय भाषा है। जिहाद का मूल और अधिकतर लिट्रेचर अरबी भाषा में है। जिस में से बहुत कम का अनुवाद हो सका है। आपको यह जान कर आश्चर्य होगा, कि जो लोग अरबी किताबों का अनुवाद करने पर अधिक खर्च कर रहे हैं, वह पश्चिमी जासूसी संस्थाएं हैं--------मुझे व्यक्तिगत रूप से इसका बहुत दुःख है---------क्योंकि यह अनुवाद मुसलमानों को लाभ पहुंचाने के लिए नहीं हो रहा है। उसके अलावा जिहाद की धरती पर सबसे अधिक शरणार्थियों(मुहाजिरीन) की भाषा अरबी है। और अरबी न जानने वालों को अधिक दुःख इस बात से होगा कि वह उन मुहाजिर मुजाहिदीन से बात भी न कर सकें। अभी जिहाद और अधिक फैलेगा और यह दूर दूर तक जाने वाला है इन शा अल्लाह अतः सभी मुहाजिरीन की कोई न कोई भाषा आपस में संपर्क के लिए चुननी होगी और मेरे नजदीक अरबी भाषा ही उसके लिए उत्तम माध्यम साबित होगी।

43. जिहादी लिट्रेचर का दूसरी भाषाओं में अनुवाद करना

जैसा कि मैंने ऊपर बयान किया है कि अधिकतर लिट्रेचर अरबी भाषा में मौजूद हैं। मेरे जो भाई और बहनें अरबी जानने के साथ साथ दूसरी भाषाएं भी जानते हैं, उन्हें इस काम को दूसरी भाषाओं में अनुवाद करने का श्रृंखला चालू कर देना चाहिए, हर परिवर्तनकारी आंदोलन का शुरुआती काम विचार का फैलाव होता है। सलाहुद्दीन ऐयूबी के बारे में लिखा है कि उन्होंने जिहादी संस्कृति सार्वजनिक करने के लिए लिट्रेचर बड़ी संख्याओं में लिखवाया, फैलाया फिर उसको बंटवाया। आज उम्मत को फिर उसी काम की आवश्यकता है। क्योंकि इस बार जिहाद किसी एक धरती क्षेत्र में नहीं बल्कि पूरी इस्लामी दुनिया में फैल जाएगा। इसलिए जिहादी लिट्रेचर पर आज से काम शुरु हो जाना चाहिए ताकि यह हर भाषा में उपलब्ध हो

44.ताइफ-ए-मंसूरा की विशेषताएं बयान करना

अल्लाह के रसूलसल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि मेरी उम्मत में एक गिरोह हमेशा अल्लाह के दुश्मनों से लड़ाई करता रहेगा और अल्लाह के हुक्म से उन्हें हराएगा किसी का विरोध उनको हानि नहीं पहुंचाएगा यहां तक कि कयामत आ जाए (हाकिम सही) इस हदीस में आपने ताइफ-ए-मंसूरा की विशेषताएं बयान की हैं जबकि एक दूसरी हदीस में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुसलमानों को मशवरा दिया है कि वह जरूर ताइफ ए मंसूरा में शामिल हो।

इस गिरोह की बुनियादी विशेषताएं जिनसे यह दूसरी गिरोहों से अलग हो सकता है वह यह हैं।

(1) الطائفہयह गिरोह संगठित रूप में है अर्थात यह इजतेमाइयत की साथ है। जैसा कि मैं पहले स्पष्ट कर चुका हूं कि हर काम की तरह जिहाद में भी इजतेमाइयत अनिवार्य है।

(2) یقاتلونलड़ाई करना इस गिरोह की मूल विशेषता है। इसी विशेषता के आधार पर यह अन्य गिरोहों से अलग पहचाना जा सकता है।

3 विरोध की परवाह न करना

जो लोग उनसे सहमत नहीं हैं वह उन्हें कोई हानि नहीं पहुंचा सकेंगे उनके इस अमल अर्थात काफिरों से लड़ाइयां करने में बहुत से लोग उनके विरोधी बन जाएंगे।लेकिन उनके विरोध से भी उन मुजाहिदीन का कुछ नहीं बिगड़ेगा। क्योंकि वह अल्लाह की विशेष सहायता के हकदार होंगे।

यह तीनों निशानियां कुरआन की उस आयत में भी मौजूद हैं जिसमें अल्लाह ने अपने पसंदीदा गिरोह की विशेषताएं बयान की हैं।

ऐ ईमान वालो! तुम में से कोई अपने दीन से फिरता है तो फिर जाए अल्लाह एक दूसरा गिरोह लाएगा जो अल्लाह के महबूब होंगे और खुद भी अल्लाह से प्रेम करते होंगे। मोमिनों पर नर्म और काफिरों पर सख्त होंगे। जो अल्लाह के रास्ता में जिहाद करेंगे और किसी की आलोचना की परवाह नहीं करेंगे यह अल्लाह की कृपा है जिसे चाहता है प्रदान करता है।

4 वह फतह(विजय) भी प्राप्त करेंगे।

अल्लाह और उसके रसूल के शब्द बड़े सार्थक होते हैं। यहां फतह से तात्पर्य इस्लाम का गालिब हो जाना नहीं है। क्योंकि इस्लामी इतिहास में ऐसे भी बहुत से अवसर आए हैं। जब अल्लाह के वलियों को बाह्य रूप से हार का सामना करना पड़ा था फतह से मुराद यह है कि उन्होंने अपने ईमान का सौदा न किया हो कभी साहस न तोड़ा हो,कभी लड़ाई से मुख न मोड़ा हो, कभी समझौता के लिए तैयार न हुए और कभी इस्लाम का झंडा झुकने न दिया और अपनी जानें कुर्बान करके शहीद हो गए हों और ईमान वालों के लिए लड़ाइयों में असल फतह यही है। कुरआन में भी जिन दो बड़ी सफलताओं का चर्चा है वह यही हैं अर्थात फतह या शहादत मुझे बताएं क्या शहीद होना हार है वास्तव में यह बड़ी सफलता है

तो मेरे भाईयो और बहनो। यह कुछ बातें थीं कि हम किस किस प्रकार से जिहाद में भाग ले सकते हैं लेकिन मेरे यह शब्द उस समय तक निरर्थक हैं जब तक इस पर अमल न किया जाए तो आज ही से इन शब्दों पर अमल करना शुरू कर दीजिए और दूसरों को भी नसीहत करें। अंत में हम अल्लाह से दुआ करते हैं कि अल्लाह हमारा सीधे मार्ग की ओर मार्गदर्शन करे और हमें उन लोगों में शामिल करे जो भलाई की बातें सुनते और उस पर बहुत अच्छे से अमल करते हैं। ऐ अल्लाह हमें मुजाहिदीन की पंक्तियों में शामिल कर दीजिए और आपके दुश्मनों पर सफलता प्रदान कर दीजिए। आमीन